लोकनाथ डोकानिया नहीं रहे!

मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

▸ अक्टूबर २००९ ▸ वर्ष ५९ ▸ अंक १०

राष्ट्रीय कार्यकारिणी सभा

हिन्दुस्तान क्लब में दिनांक ०५.१०.२००९ को संपन्न

बायें से सर्वश्री संजय हरलालका, रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति नन्दलाल रुँगटा, सीताराम शर्मा, आत्माराम सोंथलिया एवम् ओमप्रकाश पोद्दार

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

ज्ञान ज्योति यात्रा का शुभारम्भ गुवाहाटी से हुआ

विशेषः जनकवि हरीश भादानी नहीं रहे।

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity.
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph : 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

समाज विकास

✦अक्टूबर २००९ ✦वर्ष ५९ ✦अंक १० ✦एक प्रति–१० रु. ✦वार्षिक–१०० रु.

अनुक्रमणिका

क्रमांक	पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आई है	४
कविता : दीवाळी की राम–राम सा! – ताऊ शेखावाटी	४
श्रद्धांजलि : स्व. लोकनाथजी डोकानिया को	५
अपनी बात : शम्भु चौधरी	६
अध्यक्षीय : नन्दलाल रुँगटा	७
कार्यकारिणी बैठक	८–९
एक साथी कार्यकर्त्ता बिछुड़ गया – सीताराम शर्मा	१०
घर जलाकर न मनाएँ दीपावली – संजय हरलालका	११
पदाधिकारी एवं समिति सदस्यों की सूची	१२–१६
नये आजीवन सदस्यों की सूची	१८
ज्ञान ज्योति यात्रा का शुभारंभ – प्रमोद्ध सराफ	१९–२१
महाप्रयाण :	
जनकवि, वरिष्ठ गीतकार हरीश भादानी नहीं रहे.....	२२–२३
विद्रोही रचनाशीलता के सतरंगी आयामों का एक बड़ा कवि – अरुण माहेश्वरी	२४–२७
कविता : हदें नहीं होती जनपथ की – हरीश भादानी	२९
भाईसाहब भादाणी जी! – डॉ. श्रीलाल मोहता	३०
युगपथ चरण :	
ज्ञान ज्योति यात्रा : रजत जयंती समारोह	३१
दीपावली मिलन समारोह	३२
कन्हैयालाल सेठिया का ९१वां जन्म दिवस	३२
संतोष से बड़ा कोई धन नहीं – पं. मालीराम शास्त्री	३३
कविता : ऐसे दीप – जयकुमार रुसवा	३४
रितिका जैन की मौत पर गहरा शोक व्यक्त	३४

स्वत्वाधिकारी :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ✦ १५२बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता–७००००७

फोन : ०३३–२२६८ ०३१९ ✦ e-mail: samajvikas@gmail.com

के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा

ऐभल प्रिंटर्स प्रा.लि., ४५बी, राजाराम मोहन राय सरणी, कोलकाता–७००००९ में मुद्रित

✦संपादक : नंदकिशोर जालान ✦ कार्यकारी संपादक : शंभु चौधरी

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आई है :

"राजस्थानी शब्दकोश"

समाज विकास के जुलाई २००९ के अंक में जो आपने "राजस्थानी शब्दकोश" छापा है वो www.hamarabikaner.org का नहीं है। इस वेबसाईट का मालिक कृष्णकांत मेरा मित्र है और उसने मेरी अनुमति से अपनी वेबसाईट पर मेरी वेबसाईट से कोपी करके लगाया था... सबूत के तौर पर आप देख सकते है कि उसने सौजन्य मरुवाणी संघ मुंबई लिख रखा है।

वास्तव में यह शब्दकोश यहाँ से कॉपी किया गया है जो मेरी बरसों की मेहनत का नतीजा है और एक एक शब्द जोड़कर पूरा शब्दकोश तैयार करने की कोशिश की है।

मेरी वेबसाईट का पेज आप यहाँ देख सकते हैं

www.freewebs.comhanvantrajasthani_dictionary.htm

मैं इस ई–मेल के द्वारा आशा है आप मेरी बरसों की मेहनत और राजस्थानी के प्रति इस लगन को समझने का प्रयत्न करेंगें।

– हनवंतसिंघ गोपालभाई राजपुरोहित

2, राजपुरोहित निवास, पांच बावड़ी, दिंडोशी विलेज

गोरेगाम (उगमणी), मुंबई –400063

धर्म निरपेक्षता लील रही है

अगस्त २००९ अंक ८ में श्री जुगल किशोरजी जैथलिया द्वारा प्रस्तुत लेख धर्म निरपेक्षता लील रही है.....पढ़ा । पढ़कर मन आंदोलित हो गया। सच पूछिये तो किसी भी राजनीतिक दल का कोई भी नेता क्यों न हो, निश्चित रूप से व्यक्तिगत रूप से लिखित सारी बातों को जानता भी है और मानता भी है। परन्तु सत्ता प्राप्ति की क्षुद्र मानसिकता के कारण उसका और उसकी पार्टी का आचरण तुष्टीकरण की कुत्सित प्रवृत्ति का पोषक हो गया है।

सत्य ही है कि पहले मनुष्य धंधे में भी धर्म का आचरण करता था किन्तु अब तो राजनीति और धर्म में भी धंधा चलता है और यही कारण है कि जय कुमार रूसवाजी की कविता 'तिरंगे का दर्द' भी हमें उदासीन बनाए हुए है।

काश! जैथलियाजी जैसे सोचने वाले लोग राजनिति में आ जाते।

– सीताराम बाजोरिया

अध्यक्ष, परिणय कुम्भ समिति, मुजफ्फरपुर

दीवाळी की राम-राम सा!

– ताऊ शेखावाटी

दीवाळी की राम–राम सा!
बैयाँ तो ई महँगाई में

जींणो होर्‌यो है हराम सा!
दीवाळी की राम–राम सा!

चींणी बत्तीस रिंपिया किल्लो
के कर लेवै पूनम ढिल्लो
महँगाई में आटो गिल्लो
चाल बणावाँ गुड़ को चिल्लो

छोड़–छाड़ सब ताम झाम सा!
दीवाळी की राम–राम सा!

सगळा गाँव शहर अर ढांणी
बेबस है ममता मरज्यांणी
टाबर घाल रया है घांणी
घाबा नुवाँ पटाका तांणी

बाकी है सब धूमधाम सा!
दीवाळी की राम–राम सा!

चौरावाँ पर चेळ नहीं है
मिनख–मिनख में मेळ नहीं है
तेल निकळग्यो लोगाँ रो पण
दीप जळावण तेल नहीं है

होणी माता नैं सलाम सा!
दीवाळी की राम–राम सा!

बीत गयो बींनै मत जोवो
बीज नुवाँ ओजूँ स्यूँ बोवो
सुख स्यूँ जीवै मिनख जगत में
कोई अैसो रस्तो टोवो

जद होसी भारत महान सा!
दीवाळी की राम–राम सा!

– 32, जवाहर नगर
– सवाई माधोपुर–322001 (राज.)
मो. – 9414270336

श्रद्धांजलि :

सुप्रसिद्ध समाजसेवी

श्री लोकनाथ डोकानिया नहीं रहे।

स्व. लोकनाथ डोकानिया

सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री लोकनाथ डोकानिया का गत 27 सितम्बर 2009 को देहावसान हो गया। श्री डोकानियाजी ने न केवल पश्चिम बंगाल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष पद को सुशोभित किया अपितु अनेक सामाजिक संस्थाओं को अपना अभूतपूर्व सहयोग प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रदान किया। आप मारवाड़ी समाज के उत्थान हेतु सदैव प्रयत्नशील रहे और समाज में व्याप्त कुरीतियों के खिलाफ आवाज बुलंद करने एवं समाज के लोगों को सुसंगठित करने के कार्य में भी दिवंगत डोकानियाजी ने अहम् भूमिका अदा की।

2 जनवरी 1939 में बिहार के पुर्णिया जिले में जन्में श्री लोकनाथ डोकानिया स्व0 मोतीलाल डोकानिया के सुपुत्र थे। आपकी प्रारंभिक शिक्षा पुर्णिया में हुई, राजस्थान के सीकर जिले के दातल गांव से तकरीबन 200 वर्ष पूर्व आपके पूर्वज बिहार के पुर्णिया में आकर बस गये। 1960-63 तक आप बिहार प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़े रहे। सन् 1964 में स्व.डोकानिया जी कोलकाता आकर बस गय थे, आपकी पत्नी श्रीमती विमला डोकानिया दरभंगा के सुरेका परिवार से है। कोलकाता आने के बाद आपने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन से जुड़ कर विभिन्न पदों पर कार्य किया, पेशे से आप आयकर अधिवक्ता रहे, आप डायरेक्ट टेक्सेज एसोसियेशन, साल्टलेक सांस्कृतिक संसद, पूर्वांचल नागरिक समिति, लायन्स क्लब, द एग्री हर्टिकल्चर सोसाइटी, हरे कृष्ण हरे राम सोसाइटी सहित शहर की कई संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। सम्मेलन से इनको विशेष लगाव था। लगातार 46 वर्षों से आप सम्मेलन से जुड़े रहे। महिलाओं को जागरूक कर उन्हें संगठित करना, मेधावी छात्र-छात्राओं को आर्थिक मदद व सहयोग दिलाना, पारिवारिक विवादों को अपनी सूझ-बूझ से सुलझाना, अविवाहित बच्चों के लिये योग्य संबंध खोजने में सहयोग प्रदान करना आपके रुचिकर विषय थे। स्वभाव से सरल व मिलनसार श्री डोकानिया जी के तीन पुत्र व एक पुत्री (सभी विवाहित) है।

श्री डोकानियाजी के आकस्मिक प्रयाण से सम्मेलन ने तो अपना एक निष्ठावान समर्पित हितैषी व पदाधिकारी खोया ही है साथ ही मारवाड़ी समाज ने एक सच्चा पथ-प्रदर्शक व सहयोगी खो दिया है जिसकी पूर्ति असंभव है। सम्मेलन परिवार दुःख की इस घड़ी में आपके प्रति गहरी सहानुभूति रखते हुए परम पिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति व शोक संतप्त परिवार को धैर्य धारण की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता है। ◆

अपनी बात :

''ज्ञान ज्योति यात्रा''

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच अपनी रजत जयंती वर्ष को देशभर में १०० दिवसीय **''ज्ञान ज्योति यात्रा''** के रूप में मना रहा है। जिसका शुभारम्भ युवामंच की जननी गुवाहाटी में विगत १० अक्टूबर २००९ को किया गया। देशभर के १८ प्रान्तों में इस मशाल यात्रा को ले जाने का कार्यक्रम बनाया गया है जिसमें असम से शुरू होकर बंगाल, झारखण्ड, बिहार, उडीसा, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, राजस्थान, गुजरात, आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडू, कर्नाटक आदि प्रान्तों से गुजरते हुए २० जनवरी २०१० को पुन: गुवाहाटी में इस यात्रा का समापन किया जायेगा। इस यात्रा के दौरान मंच साथियों को एक संदेश देने का प्रयास किया गया है कि मंच देशभर के विकलांग भाइयों की सेवा हेतु अग्रसर हो। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जितेन्द्र गुप्ता ने इस यात्रा का नारा दिया है **''विकलांगता विहीन हो देश हमारा''**। युवा मंच के प्रवर्तक श्री अरुण बजाज रजत जयंती समिति के चेयरमैन हैं।

मारवाड़ी युवा मंच को मूर्तरूप देने में जहाँ **''पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन''** का अहम स्थान रहा है वहीं इस संस्था को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने का श्रेय यदि किसी सदस्य को जाता है तो उसमें सर्वश्री पवन सिकारिया, विनोद मोर और हरि प्रसाद शर्मा का नाम लिया जा सकता है। जिसमें सर्वाधिक योगदान का श्रेय श्री पवन सिकारिया को दिया जाना उचित रहेगा। युवा मंच के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन को सफल एवं सार्थक बनाने की दिशा में सतत् प्रयत्नशील श्री नन्दकिशोर जालान ने **'समाज विकास'** दिसम्बर' ८४ अंक में लिखा है कि ''युवामंच के पदाधिकारियों के साथ उत्तरी बंगाल, उत्तरी बिहार, नेपाल एवं पूर्वी बिहार का व्यापक दौरा किया गया। दौरे के कार्यक्रम का प्रथम चरण पश्चिम बंगाल के सिलीगुड़ी शहर से दिनांक २३ नवम्बर से प्रारम्भ हुआ और आज यह दौरा ७–१२–१९८४ तक लगातार जारी रहा। इस यात्रा के दौरान युवामंच अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष श्री प्रमोद्ध कुमार सराफ, संयुक्त स्वागत मंत्री श्री पवन कुमार सिकारिया एवं श्री विनोद कुमार मोर साथ थे।''

मंच के स्थापना वर्ष के प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रकाशित स्मारिका में श्री सुरेश बेड़िया जो उस समय 'पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन – युवा मंच' के अध्यक्ष थे ने लिखा है कि ''इसी दौरान युवामंच की शाखा देश के कई अन्य भागों में भी खुली और युवामंच को एक राष्ट्रीय रूप देने का प्रयास जारी रहा। 'अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन' के सहयोग से युवामंच को राष्ट्रीय स्तर पर गठन करने का 'पूर्वोत्तर प्रदेशीय मारवाड़ी सम्मेलन – युवामंच' का विनम्र प्रयास अब आपके समक्ष है।''

मारवाड़ी युवा मंच अपनी ५७० शाखाओं के माध्यम से समाज सेवा के क्षेत्र में नित्य नये मील के पत्थर स्थापित करते जा रहा है। २५ अक्टूबर को कोलकाता में अयोजित रजत जयंती समारोह के अवसर पर मशाल यात्रा कोलकाता से गुजरती हुई हावड़ा शाखा की तरफ प्रस्थान कर गई। सुबह ७.३० बजे हरियाणा भवन से एक विशाल रैली के रूप में मशाल ज्योति को पूरे सम्मान के साथ शहर के मध्य से घुमाया गया एवम १०.३० बजे से स्थानीय 'महाजाति सदन' में एक सम्मान समारोह का अयोजन किया गया था । जिसमें समाज के कुछ स्थानीय समाज बंधुओं के साथ–साथ **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन** को भी सम्मानित किया गया। कोलकाता में श्री सज्जन भजनका की अध्यक्षता में रजत जयंती के आयोजन हेतु एक समिति का गठन किया गया, श्री महेश शाह इस समिति के सचिव बनाये गये थे। आपके कुशल नेतृत्व को सहयोग देने वाले सदस्यों में श्री दिलीप गोयनका, श्री विमल कुमार चौधरी, श्री मुकेश खेतान, श्री सज्जन बेरीवाल व श्रीमती अनुराधा खेतान विशेष प्रशंसा के पात्र हैं।

देश में शायद 'मारवाड़ी युवा मंच' ही एक मात्र पहली सामाजिक संस्था होगी जिसने १०० दिनों की देशभर में यात्रा का अयोजन करने की योजना को हाथ में लिया है। धार्मिक या राजनैतिक उद्देश्य से देश में यात्रायें तो कई बार हुई हैं, परन्तु किसी सामाजिक संस्था द्वारा वह भी जनसेवा के उद्देश्य को लेकर यात्रा का आयोजन करना अपने आप में साहसिकतापूर्ण कार्य तो है ही, साथ ही इस यात्रा से मारवाड़ी समाज की जनसेवा की सोच को भी उजागर करता है। हम इस यात्रा के हर पहलू का खुले दिल से न सिर्फ स्वागत करते हैं अपितु समाजबन्धुओं से अनुरोध करते हैं कि इस यात्रा को सफल बनाने में अपना भरपूर सहयोग प्रदान करें।

– दीपावली की शुभकामनाओं के साथ। – शम्भु चौधरी

अध्यक्षीय :

फिजूलखर्ची को रोके मारवाड़ी समाज

नन्दलाल रुँगटा, अध्यक्ष,
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

सन् १९३५ में स्थापित मारवाड़ी सम्मेलन के स्थापना काल से ही सम्मेलन **'समाज सुधार'** के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता आया है। आमतौर पर सामाजिक संस्थाओं में इस विषय पर कोई चर्चा नहीं की जाती, कारण स्पष्ट है **''बिल्ली के गले में घंटी कौन बांधे''** परन्तु मेरी जहाँ तक समझ है कि मारवाड़ी समाज द्वारा संचालित एक मात्र यही संस्था है, जो समाज में व्याप्त कुरीतियों की न सिर्फ चर्चा करती हैं वरन् उनके उन्मूलन के लिए जनचेतना का संचार भी करती है।

सामाजिक कूरीतियों का स्वरूप जो निरन्तर बदलता रहता है एक समय बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा विवाह जैसी कई समस्या समाज के सामने थी। स्व. भंवरमल सिंघीजी ने पर्दा प्रथा का जहाँ खुल कर विरोध किया था, वहीं विधवाओं के पूनर्विवाह के कट्टर समर्थक माने जाते थे। सम्मेलन के बैनर के तले कई जन आन्दोलनों को आपने नेतृत्व भी प्रदान किया था। धीरे–धीरे समाज के अन्दर नई बुराइयाँ आने लगीं। मेरी सोच है कि **'''समाज–सुधार' एक निरन्तर प्रक्रिया है''** कारण स्पष्ट है, आज बाल–विवाह, पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियाँ समाज में प्राय: नहीं रही, न अब विधवाओं के पुनर्विवाह की कोई बड़ी समस्या है। आज समाज की समस्या है तलाक, आडम्बर एवं अन्तर्जातिय विवाह की जिसे समाज खुले तौर पर अभी तक नहीं स्वीकार कर पाया है। कहने को हम कुछ भी कह लें अब एक नई समस्या हमारे सामने बड़ी तेजी से उभर कर सामने आ रही है 'वृद्धों की देख भाल की।

पिछले दिनों सम्मेलन द्वारा **"अन्तर्जातिय विवाह कुछ अनुभव''** पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था। इसमें कई प्रकार के स्वर उभर कर सामने आये जहाँ एक वर्ग ने अन्तर्जातिय विवाह का समर्थन किया तो वहीं उन्होंने अन्तधर्मिय विवाह को स्वीकार करने में असहमती जताई। जबकि दूसरे वर्ग द्वारा अन्तर्जातिय विवाह पर आयोजित गोष्ठी पर ही प्रश्न चिन्ह खड़े करते हुए सम्मेलन को इस तरह के संवेदनशील प्रश्न पर मौन रहने की सलाह दी गयी।

मित्रों! सम्मेलन समस्याओं को सामने रखकर देखने का एक आईना है। यह समस्याओं से मुँह छिपाने को सही नहीं मानता, कदाचित इस तरह के विषय पर समाज में दो मत संभव हैं। विरोधाभाष के बीच चलकर मार्ग निकालना सम्मेलन का लक्ष्य रहा है इस कार्य को करने में सम्मेलन ने न तो पहले कभी संकोच किया न ही आज किसी भी पक्ष के दबाव को स्वीकार करने को तैयार है।

मित्रों! सम्मेलन समस्याओं को सामने रखकर देखने का एक आईना है। यह समस्याओं से मुँह छिपाने को सही नहीं मानता, कदाचित इस तरह के विषय पर समाज में दो मत संभव हैं। विरोधाभाष के बीच चलकर मार्ग निकालना सम्मेलन का लक्ष्य रहा है इस कार्य को करने में सम्मेलन न तो पहले कभी संकोच किया न ही आज किसी भी पक्ष के दबाव को स्वीकार करने को तैयार है।

समाज में जो समस्या 'सूरसा' की तरह अपने पांव फैला रही है वह है विवाह–शादियों या जन्मदिवस के अवसर पर फिजूलखर्ची। समाज का हर व्यक्ति पांच सितारा तोड़ लाना चाहता है। जिसके पास है, वे किसी की भला क्यों सुनें। सम्मेलन ने विवाह शादी के अवसर पर होने वाली फिजूलखर्ची पर कई बार नियम बनाये, लेकिन उनका पालन नहीं हो सका है। इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि सम्मेलन इन बातों की चर्चा समाप्त कर दे एवं सम्मेलन समाज सुधार की प्रक्रिया से अलग हो जाए। सम्मेलन समस्त समाज का प्रतिनिधित्व करता है। समाज का प्रत्येक वर्ग इस बीमारी से ग्रस्त है। समाज में हो रहे आडम्बरों तथा विवाह–शादियों पर हो रही फिजूलखर्ची को एक जूट होकर रोकना होगा इसमें आप सभी का सक्रिय समर्थन आवश्यक है। दीपावली की हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।◆

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

कार्यकारिणी की बैठक

बायें से संयुक्त महामंत्री श्री संजय हरलालका, महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा, पूर्व अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया, संयुक्त महामंत्री श्री ओमप्रकाश पोद्दार

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के वर्तमान सत्र की तृतीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक बुधवार, ०७ अक्टूबर २००९ को हिन्दुस्तान क्लब के गैलेक्सी हॉल, शरत बोस रोड, कोलकाता में सायं ७ बजे रात्रि भोज के साथ सम्पन्न हुई। सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने बैठक की अध्यक्षता की।

बैठक में सभापति ने उपस्थित सदस्यों को बताया कि गत ९ माह में १११ संरक्षक, ९६ आजीवन तथा १२१ विशिष्ठ सदस्य बने हैं जिससे प्राप्त राशि में से ६२.५० लाख रुपयों की फिक्स डिपाजिट करा दी गई है।

- 111 संरक्षक, 96 आजीवन तथा 121 विशिष्ठ सदस्य
- 62.50 लाख रुपये की फिक्स डिपाजिट

आपने बताया कि सम्मेलन के महात्मा गांधी रोड, कोलकाता में स्थित केन्द्रीय कार्यालय में एक दक्ष व्यवस्थापक की कमी है। कार्यालय के मरम्मत के सम्बन्ध में आपने कहा कि मकान मालिक से विवाद अभी तक सुलझा नहीं है। हम चाहते हैं कि आपसी सहमति से विवाद सुलझ जाए। सम्मेलन की मुख पत्रिका समाज विकास के सम्बन्ध में आपने कहा कि हमारा प्रयास है कि इसमें और अधिक जानकारीमूलक सामग्री का समावेश हो तथा समाज के लोगों के लेख–विचार आदि प्रकाशित हों। आपने कहा कि सम्मेलन द्वारा जनसेवा का कुछ न कुछ काम निरन्तर होते रहना चाहिए। राजनैतिक चेतना भी समाज में जरूरी है, इसके लिए सम्मेलन प्रयासरत है। उच्च शिक्षा के सम्बन्ध मे आपने कहा कि सम्मेलन इसमें सहयोगी की भूमिका का निर्वाह कर रहा है। वर्तमान में सम्मेलन आर्थिक रूप से इस स्थिति में नहीं है कि वह उच्च शिक्षा का अपना कोई कोष बनाये। जब भी कोष बनेगा वह राष्ट्रीय कार्यकारिणी की सहमति से बनेगा। आपने बताया कि सम्मेलन के सदस्यों की डायरेक्टरी दिसम्बर २००९ तक प्रकाशित करने का प्रयास चल रहा है। श्री रुँगटा ने बताया कि सम्मेलन को आयकर की धारा १२एए तथा फाउण्डेशन को ८०जी(५) का नवीनीकरण प्रमाणपत्र मिल गया है तथा शीघ्र ही सम्मेलन को भी ८०जी का प्रमाणपत्र मिल जाना चाहिए।

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार ने गत बैठक की कार्यवाही प्रस्तुत की तथा विगत दिनों सम्मेलन द्वारा किये गये कार्यो का ब्यौरा रखा।

सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा भाषण देते हुए

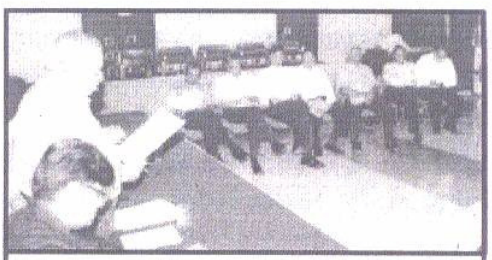

राष्ट्रीय महामंत्री श्री रामअवतार पोद्दार अपना रिपोर्ट पढ़ते हुए

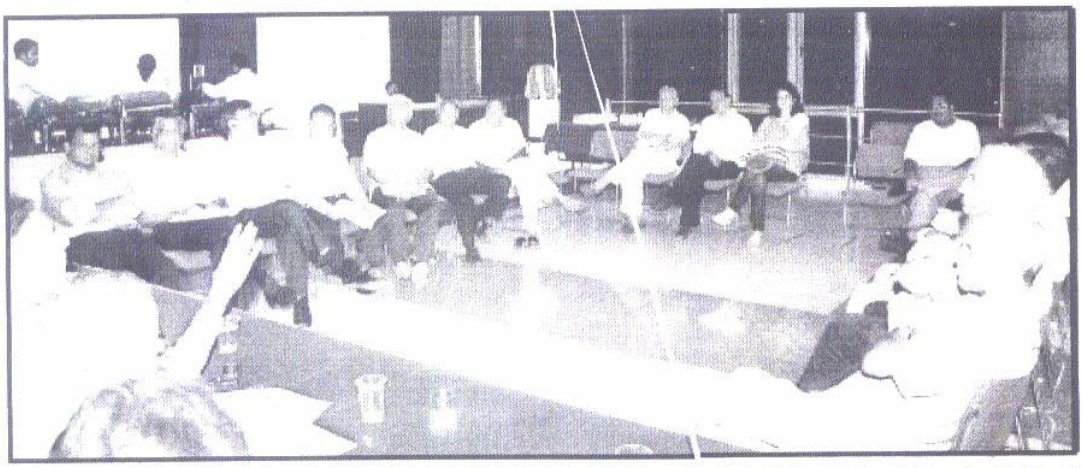

कोषाध्यक्ष श्री आत्माराम सोंथलिया ने चालू वित्तीय वर्ष का आय–व्यय ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए बताया कि सम्मेलन की आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हुआ है लेकिन यह संतोषजनक नहीं है इसमें अभी और सुधार की जरूरत है।

कौस्तुभ जयन्ती कमेटी के अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने बताया कि २५ दिसम्बर २००९ से २५ दिसम्बर २०१० तक कौस्तुभ जयंती के कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने सभी सदस्यों से अपील की कि वे कौस्तुभ जयंती के दौरान आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के सम्बन्ध में सुझाव मौखिक या लिखित रूप में दें। आपने बताया कि कौस्तुभ जयंती वर्ष के दौरान राष्ट्रपति श्रीमति प्रतिभा पटिल को आमंत्रित करने तथा समाज के विभिन्न क्षेत्रों के विशिष्ट व्यक्तियों का राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान करने की योजना है। आपने बताया कि २५ दिसम्बर

२०१० को समाज विकास का विशेष विशेषांक प्रकाशित करने की योजना है। सम्मेलन के ७५ साल का इतिहास प्रकाशित करने की भी योजना है।

बैठक में उपस्थित सदस्यों ने एकल सदस्यता के मामले की प्रगति, सभी राज्यों में समान रूप से संविधान लागू करने और जहां वर्षों से चुनाव नहीं हुए हैं वहां चुनाव करवाये जाने सम्बन्धी प्रश्न, कौस्तुभ जयंती वर्ष के अंतर्गत आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के बजट तथा फण्ड सहित माननीय सदस्यों के अन्य प्रश्नों का उत्तर देते हुए अध्यक्ष महोदय ने कहा कि एकल सदस्यता के बारे में प्रान्तों से बातचीत काफी आगे बढ़ी है। सभी प्रदेशों के अध्यक्षों तथा मंत्रियों के साथ होने वाली बैठक में इस पर बातचीत होगी। सभी प्रान्तों में चुनाव सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर देते हुए आपने बताया कि एक–दो प्रान्तों को छोड़कर सभी जगह चुनाव हो गये हैं जहां नहीं हुए हैं उन्हें पत्र भेजा गया है। कौस्तुभ जयंती के बजट एवं अर्थ संग्रह के सम्बन्ध में आपने कहा कि बजट कार्यक्रमों के अनुसार तय होगा। समाज विकास में विज्ञापन रूपी सहयोग लिया जायेगा।

बैठक में सम्मेलन के केन्द्रीय कार्यालय की मरम्मत के सम्बन्ध में राष्ट्रीय महामंत्री ने कहा कि कुछ माह पहले कार्यालय की मरम्मत का कार्य शुरू किया गया था लेकिन मकान मालिक के विरोध एवं श्री नारायण जैन के हस्तक्षेप से काम रुकवा दिया गया था।

राष्ट्रीय अध्यक्ष ने श्री जैन से अनुरोध किया कि वे संयुक्त महामंत्री श्री ओम प्रकाश पोद्दार एवं मकान मालिक से बातचीत कर इसका समाधान करें।

अंत में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व कोषाध्यक्ष तथा पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री लोकनाथ डोकानिया एवं वरिष्ठ कवि श्री हरीश भादानी, झारखण्ड प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन के संथाल परगना के उपाध्यक्ष श्री किशोरी लाल मोदी के निधन पर उन्हें दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि दी गई।◆

एक मित्र को श्रद्धांजलि

लोकनाथ डोकानिया

एक साथी कार्यकर्त्ता बिछुड़ गया

- सीताराम शर्मा, पूर्व अध्यक्ष
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

प्राय: यह कहा जाता है कि समाज में कार्यकर्त्ताओं का अभाव हो रहा है। गत् २७ सितम्बर २००९ को हमारे बीच से एक सच्चा, ईमानदार एवं कर्मठ कार्यकर्त्ता—लोकनाथ डोकानिया—हम सबसे सदा के लिये बिछुड़ गया। नेताओं की भीड़ में इस सामाजिक कार्यकर्त्ता को न मंच या पद की दौड़ से सरोकार था, न ही माईक या फोटो की होड़ से, न लम्बा—चौड़ा भाषण देना उन्हें आता था न ही इसमें विश्वास करते थे। बात कम, काम ज्यादा सिद्धान्त के, सच्चे एवं सही उदाहरण थे।

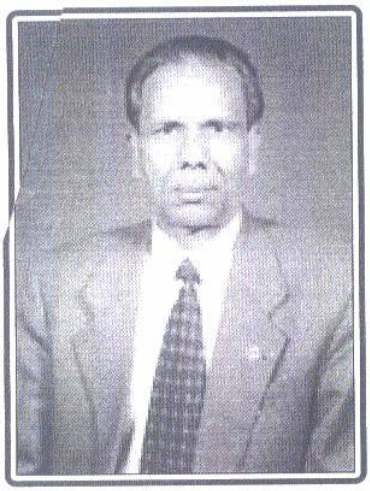

स्व. लोकनाथ डोकानिया

मुझे उन्हें जानने, समझने एवं साथ काम करने का पहला अवसर १९९३ में मिला जब लोकनाथ जी के साथ अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का संयुक्त महामंत्री निर्वाचित किया गया। लोकनाथ जी मुझसे वरिष्ठ थे। कई वर्षों पहले से सम्मेलन से उनका जुड़ाव था। इसी दौरान मुझे उनका कार्यकर्त्ता स्वरूप एवं बड़प्पन दोनों देखने को मिले। हम पदाधिकारी जब भी एकत्रित होकर कार्य की जिम्मेदारी का बंटन करते लोकनाथ जी सदैव एक सक्रिय कार्यकर्त्ता के रूप में नये सदस्य बनाने का, समाज विकास के लिये विज्ञापन इकट्ठा करने का अथवा प्रांतों के दौरे की जिम्मेदारी स्वत: स्वीकार करते।

स्व. दीपचन्दजी नाहटा राष्ट्रीय महामंत्री थे। उनका स्वास्थ्य बहुत ठीक नहीं था। इसलिये उनके कुछ कार्य अध्यक्ष नन्दकिशोर जालानजी ने मुझे संपादित करने को कहा। मुझे कुछ अटपटा सा लग रहा था क्योंकि सभी पदाधिकारियों में मैं सबसे जूनियर था, उम्र में भी एवं वरिष्ठता में भी। मैं चाहता था नाहटा जी की अनुपस्थिति या असमर्थता की स्थिति में बैठक की कार्यवाही, आदि का कार्य वरिष्ठ संयुक्त महामंत्री लोकनाथजी संभालें। मैंने जब यह प्रार्थना जालानजी से की तो उन्होंने कहा कि लोकनाथजी ने स्वयं जालानजी से मुझे यह जिम्मेदारी देने का अनुरोध किया है। हम दोनों ने लगभग चार वर्षों तक एक ही पद पर रहकर सम्मेलन में कार्य किया। मुझे अधिक अधिकार, प्रमुखता, मंच—माईक दिया जाता था लेकिन लोकनाथ जी को इससे ईर्ष्या या मनमुटाव तो दूर उनका मेरे प्रति सहयोग एवं मिलता अद्‌भुत प्रेमपूर्ण था। प्राय: जहाँ ऐसी परिस्थितियों में सम्बन्धों में तनाव एवं द्वेष पैदा होने की संभावना रहती है वहीं हमारे गहरे मित्रतापूर्ण सम्बन्धों की नींव इसी दौरान पड़ी। इस मित्रता में एक—दूसरे के प्रति आस्था थी, एवं एक दूसरे के प्रति सम्मान था।

मित्रता की घनिष्ठा में साथ—साथ उनको एवं उनके परिवार को और अधिक नजदीक से जानने का अवसर प्राप्त हुआ। जमीन से जुड़े, लोकनाथ जी के जीवन से मिट्टी की सुगंध आती थी। तबीयत खराब होने के कुछ वर्ष पहले तक सूट—टाई पहनने वाले आयकर परामर्श दाता लोकनाथजी प्रत्येक वर्ष एक—दो महीने के लिये बिहार में अपने गांव जाते थे एवं स्वयं खेत जोतते थे। "इतनी जमीन है, खेती है मेरे बाद कोई लड़का जाने वाला नहीं है"— बीच—बीच में कहते थे उन्हें अपने लड़कों पर बड़ा गर्व था, होता भी क्यों नहीं लड़के ही नहीं उनकी बहुएं भी एक से बढ़कर एक शिक्षित एवं बुद्धिमान साथ ही विनम्र एवं मृदुभाषी।

अपने व्यवसायिक ही नहीं सामाजिक जीवन में भी उन्हें अपनी पत्नी एवं पुत्रों का बहुत बड़ा सहयोग मिला। कई वर्षों से उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं चल रहा था। लेकिन उनके मनोबल में कभी कमी नहीं आयी। अपनी बीमारी के विषय में वे ज्यादा बात नहीं करना चाहते थे। उसकी गम्भीरता से चिंतित नहीं होते थे—संभवत: यही उनकी अस्वस्थता के बावजूद ऊर्जा एवं सक्रियता का रहस्य था। सम्मेलन में उनकी जान बसती थी। तभी १३ सितम्बर को साल्टलेक में सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में अस्वस्थता के बावजूद पधारे एवं खड़े होकर अपनी बात भी रखी, किसे पता था यह उनकी सम्मेलन में अन्तिम भागीदारी होगी। सम्मेलन ने एक कर्मठ कार्यकर्त्ता खोया है एवं मैंने एक सच्चा मित्र। ईश्वर उनकी आत्मा को शांति प्रदान करें।◆

घर जलाकर न मनाएँ दीपावली

– संजय हरलालका
संयुक्त राष्ट्रीय महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

एक और दीवाली आई और चली गई। लेकिन इस दीवाली पर एक बार फिर कोलकाता में कुछ ऐसी घटनाएं घटीं जो कुछ परिवारों के लिए मानसी माहौल मे तब्दील हो गई। दीवाली की रात प्रतिबन्धित पटाखे न छोड़ने को लेकर पुलिस ने काफी प्रचार किया था। पोस्टर चिपकाए थे, अखबारों में विज्ञापन दिये थे। बावजूद इसके लोगों ने पटाखे फोड़े। पुलिस ने भी अपनी कार्यवाई की और सैकड़ों लोगों को अपनी गिरफ्त में लिया। जिनमें से अधिकांश तो उसी रात कुछ ले–देकर या सिफारिश के बल पर छूट गये और कुछ अभी भी जेल में हैं।

चूंकि इस बार मेरा भी ऐसी घटना से पाला पड़ा, तो काफी कुछ समझने और देखने का मौका मिला। मेरे कुछ परिचितों और उनके पुत्रों को लेकटाउन पुलिस ने उनके मकान की छत से पकड़ा। इनमें सभी दोषी थे ऐसा भी नहीं था। लेकिन पुलिस ने सीढ़ी पर चढ़ते या छत पर खड़े प्रत्येक व्यक्ति को पकड़ा और जानवर की तरह ऑटो में ठूंसकर थाने ले गई। जब मेरे पास इसकी सूचना आई तो मैंने एक–दो नेताओं से सम्पर्क साधा। अंततः उसी इलाके के एक मारवाड़ी सामाजिक कार्यकर्ता, जिसकी थाने में जान–पहचान थी ने थाने में पहुंचकर उन्हें अभिभावकों की निजी जमानत पर छुड़वाया। इस दौरान करीब ३–४ घंटे थाने के बाहर एवं भीतर रहने का मौका मिला।

इस दौरान देखने में आया कि रात भर पुलिस लोगों को पकड़कर लाती रही और वहां सक्रिय दलाल रूपी पुलिस के कुछ कर्मी गिरफ्तारों को छुड़ाने की एवज में उनके अभिभावकों से सौदेबाजी करते रहे। गिरफ्तार लोगों में अधिकांश मारवाड़ी समुदाय के थे। उनको तथा उनके रिश्तेदारों को यह किसी भी तरह गंवारा नहीं था कि वे एक पल के लिये भी थाने में रहें। इसके लिए चाहे जो कुछ देना पड़े। हो भी क्यों नहीं, आखिर साल भर का सबसे बड़ा त्यौहार जो था और कइयों ने तो दीपावली का पूजन भी नहीं किया था।

इन सब घटनाओं को देखकर कई प्रश्न एक साथ उमड़ पड़े। पुलिस और प्रशासन जो जनता से पुलिस के सम्बन्ध सुधारने के बारे में बड़ी–बड़ी बातें करती है क्या उनका इस तरह निर्दोष लोगों को भी पकड़ कर लाना उचित था? प्रतिबन्धित पटाखों को न छोड़ने की गुजारिश करने वाली पुलिस पहले से ही ऐसी जगहों से पटाखों की बिक्री पर रोक क्यों नहीं लगा पाती है जहां ये प्रतिबन्धित पटाखे बिकते है? बाजी बाजार, जो पुलिस और प्रशासन द्वारा पटाखे खरीदने का अधिकृत बाजार है वहां से पटाखे खरीदकर लाने वाला व्यक्ति तो यह सोचता है कि मैंने तो वहीं पटाखे खरीदे हैं जो सरकार द्वारा अनुमोदित हैं जबकि पुलिस उन्हें प्रतिबन्धित पटाखे बता देती है। तो क्या बाजी बाजार में भी प्रतिबन्धित पटाखे बिकते हैं? और अगर ऐसा है तो प्रशासन को उस पर रोक लगानी चाहिए। न रहेगा बांस, और न बजेगी बांसुरी। पटाखों पर लेबल चिपकाने का कानून भी पारित किया जा सकता है कि यह प्रतिबन्धित पटाखा नहीं है। ऐसे में लोग पटाखों की खरीददारी के सम्बन्ध में सचेत हो सकते हैं। लेकिन ऐसा कुछ न कर कुछ इलाकों में दीपावली की रात भर चला पुलिस का ताण्डव। आखिर उन पर भी तो पटाखों को लेकर अदालत का आदेश लटक रहा था सो कार्यवाई दिखाना भी उनकी मजबूरी थी।

दूसरी तरफ, पटाखे छोड़ने वालों को भी कानून–व्यवस्था का सम्मान करना चाहिए। अक्सर हम देखते हैं कि अपनी खुशी के लिए हम दूसरों की तकलीफों को नजरअंदाज कर देते हैं। हम तो खुशी में पटाखे छोड़ते हैं लेकिन वह किसी के लिए दुःखद भी हो सकता है इस ओर हम ध्यान ही नहीं देते। आपके बगल में कोई अस्पताल हो सकता है या कोई बीमार हो सकता है, कोई दमा का मरीज हो सकता है। कोई अपनी पढ़ाई कर रहा हो सकता है। उन पर क्या बीतती होगी, क्या यह कभी हमने सोचा है? क्या सिर्फ तेज आवाज वाले पटाखों से ही दीवाली मनाई जा सकती है। जबकि रोशनी के पटाखों की बाजार में भरमार है। सबसे बड़ी बात है कि कुछ भी ले–देकर छूटने वाली बात से पुलिस के मुंह में भी खून लगता है कि इनको पकड़ने से अपनी दीवाली तो हो ही जायेगी। ऐसे धन के प्रदर्शन से क्या हम अपना ही नुकसान नहीं कर रहे हैं? मारवाड़ी सम्मेलन ने हमेशा आडम्बर, फिजूलखर्ची और धन के अनर्गल प्रदर्शन के खिलाफ आवाज बुलंद की है। लेकिन धन के नशे में हमें अच्छे–बुरे का भान भी नहीं रहे है।

दीवाली धनप्रदाता माँ लक्ष्मी तथा रोशनी का त्यौहार है। ऐसे त्यौहारों पर हम लक्ष्मी को प्रसन्न करने हेतु पूजन करते हैं ताकि वह हमारे घरों में विद्यमान रहे। लेकिन क्या वास्तविक रूप में हम ऐसा कर पा रहे हैं? एक तो पटाखों की खरीददारी में अपव्यय करते हैं और फिर थाने और पुलिस के चक्कर में लक्ष्मी को खोते हैं। रोशनी का त्यौहार दीपकों से रोशन हो, तो ही उसकी शोभा होती है। घर जलाकर की गई रोशनी से दीपावली नहीं मनाई जा सकती। इसलिए हम अगर अपनी परम्पराओं और मान्यताओं के साथ दीपावली को मनाएं तो साल का प्रत्येक दिन हमारे लिए दीवाली होगा। दीपक स्वयं को जलाकर हमें रोशनी देता है। इससे हमें शिक्षा लेनी चाहिए और दूसरों के घरों को भी रोशन करना चाहिए तभी दीवाली की सार्थकता सिद्ध होगी।

बाग की बात को सिर्फ बाग का माली समझे,
दर्द फूलों का झुकती हुई डाली समझे।
ये क्या रीति चलाई दुनिया वालों ने,
दीये का दिल जले और लोग दीवाली समझें।।

ALL INDIA MARWARI FEDERATION

152-B, MAHATMA GANDHI ROAD, KOLKATA - 700 007

NATIONAL EXECUTIVE COMMITTEE (2008-10)

NATIONAL OFFICE BEARERS

SRI NANDLAL RUNGTA
NATIONAL PRESIDENT, AIMF
RUNGTA HOUSE
SADAR BAZAR,
CHAIBASA -833 201, JHARKHAND
Ph: (06582) 256861/256761 (O)
Fax: (06582) 256442
Mobile: 094311 10261,
e-mail: rungtas@satyam.net.in
Kolkata Office:
Phone: (033) 22816580/3751
E-mail: rungta_cal@sify.com

SRI HARI PRASAD KANORIA
National Vice President, AIMF
M/s Deo Volent Impex Ltd.
216, A.J.C.Bose Road
KOLKATA - 700 017
Ph: (33) 22470107 (O)
24797705 (R)
Mobile: 098300 47977

SRI RAJ K.PUROHIT
National Vice Prsident, AIMF
Sriniwas House
54/56, Chandan Wadi
Mumbadevi, Janaseva Kendra
MUMBAI - 400 002 (Maharashtra)
Ph: (022) 2281 2606
Mobile: 098212 43352

SRI GANESH PRASAD KANDOI
National Vice President, AIMF
Kandoi Transport Ltd.,
Professor Para
CUTTACK - 753 003 (Orissa)
Ph: (0671) 2311778, 2311179 (O)
Mobile: 094370 45996

SRI BADRI PD.BHIMSARIA
National Vice President, AIMF
106, Ashiyana Bihar Apartment
Rajendra Path
PATNA - 800 001
Ph: (0612) 2321564
Mobile: 093349 54040

SRI OM PRAKASH KHANDELWAL
National Vice President, AIMF
M/s Purvanchal Rolling Mills
G.S.Road, Dispur
GUWAHATI - 781 005, ASSAM
Ph: (0361) 2343083/ 2346805
Mobile: 09435045425

SRI RAMVILASH SABOO
National Vice President, AIMF
3-5-144/3, Eden Garden
Ram Kothi
HYDERABAD - 500 001 (A.P.)
Ph: (040) 24751177
Fax: 24651296
Mobile: 098493 73738

SRI RAM AWATAR PODDAR
National General Secretary, AIMF
M/s Rajesh Coal Co.
2, Brabourne Road, 6th Floor
KOLKATA - 700001
Ph: (033) 22251862-5 (O)
Mobile: 09830019281

SRI OMPRAKASH PODDAR
Joint General Secretary, AIMF
196, Jamunalal Bajaj Street
Bilash Roy Katra
KOLKATA - 700 007
Ph: (033) 2269 1032/0914 (R)
Mobile: 09830161611

SRI SANJAY HARLALKA
Joint General Secretary, AIMF
42, Pathuria Ghat Street
Seva Sansar
KOLKATA - 700 006
Ph: (033) 32960578 (O)
Fax: (033) 2259 4049
Mobile: 09830083319

SRI ATMARAM SONTHALIA
National Treaserer, AIMF
M/s Jai Bharat Commercial Company
23/24, Radha Bazar Street
3rd floor, KOLKATA - 700 001
Ph: (033) 22318944, 22425889 (O) 23372700/8948 (R)
Fax: 033-22429613, Mobile: 09831026652
E-mail: jbee.sonthalia@yahoo.com

EX-NATIONAL PRESIDENTS & SECRETARIES (EX-OFFICIO)

SRI NAND KISHORE JALAN
Ex-National President (AIMF)
KOLKATA

SHRI HARI SHANKAR SINGHANIA
Ex-National President (AIMF)
NEW DELHI

SRI HANUMAN PRASAD SARAWAGI
Ex-National President (AIMF)
RANCHI (Jharkhand)

SRI MOHAN LAL TULSIAN
Ex-National President (AIMF)
KOLKATA

SRI SITA RAM SHARMA
National President, AIMF
KOLKATA

SRI RATAN LAL SHAH
Ex-National General Secretary(AIMF)
KOLKATA

SRI BHANI RAM SUREKA
Ex-National General Secretary (AIMF)
KOLKATA

NATIONAL PRESIDENT & SECRETARY (EX-OFFICIO): (YUVA MANCH & MAHILA SAMMELLAN)

SRI JITENDRA KUMAR GUPTA
National President, AIMY Munch
DELHI - 110 008

SRI PURUSHOTTAM AGARWAL
National General Secretary, AIMY Munch
ANGUL - 759 122, Orissa

SMT. PUSHPA KHAITAN
National President, AIMM Sammelan
Rourkela, ORISSA

SMT. PUSHPA AGARWAL
National General Secretary, AIMM Sammelan
Rourkela, ORISSA

PROVINCIAL PRESIDENTS & SECRETARIES (EX-OFFICIO)

SRI RAMESH KUMAR BANG
President, A.P. Pradeshik Marwari Sammelan
HYDERABAD, Andhara Pradesh

SRI NARESH CHANDRA VIJYVARGIYA
Secretary, A.P. Pradeshik Marwari Sammelan
HYDERABAD, Andhara Pradesh

SRI KAMAL NOPANI
President, Bihar Pradeshik MarwariSammelan
PATNA, Bihar

SRI RAJESH KUMAR SIKARIA
Secretary, Bihar Pradeshik Marwari Sammelan
PATNA (Bihar)

SRI B.L.JAIN
President, Chattis. Pradeshik Marwari Sammelan
RAIPUR

SRI HARI SHANKAR SHARMA
Secretary, Chattis. Pradeshik Marwari Sammelan
RAIPUR

SRI PANNA LAL BAID
President, Delhi Pradeshik Marwari Sammelan
NEW DELHI

SRI PAWAN KUMAR GOENKA
Secretary, Delhi Pradeshik Marwari Sammelan
NEW DELHI

SRI BINAY SARAWGI
President, Jharkhand Prantiya Marwari Sammelan
RANCHI

SRI KAMAL KEDIA
President, Jharkhand Prantiya Marwari Sammelan
RANCHI (Jharkhand)

SRI KAILASH CHANDRA GUPTA
President, M.P. Pradeshik Marwari Sammelan
JABALPUR

SRI RAMESH KUMAR GARG
Secretary, M.P. Pradeshik Marwari Sammelan
JABALPUR

SRI RAMESH CH.GOPIKISHAN BANG
President, Maharastra Pradeshik Marwari Sammelan
Hingna, Nagpur, MAHARASHTRA

SRI LALIT SAKALCHAND GNADHI
Secretary, Maharashtra Pradeshik Marwari Sammelan
KOLHAPUR, Maharashtra

Dr. S. S. HARLALKA
President, Purvottar Pradeshik Marwari Sammelan
GUWAHATI (Assam)

SRI OMPRAKASH CHOUDHARY
Secretary, Purvottar Pradeshik Marwari Sammelan
GUWAHATI (Assam)

SRI KAILASH MULL DUGAR
President, Tamilnadu Pradeshik Marwari Sammelan
CHENNAI

SRI VIJAY KUMAR GOYAL
Secretary, Tamilnadu Pradeshik Marwari Sammelan
CHENNAI

SRI OM PRAKASH GOENKA
President, U.P. Pradesh Marwari Sammelan
KANPUR (U.P.)

SRI GOPAL SUTWALA
Secretary, U.P. Pradeshik Marwari Sammelan
KANPUR (U.P.)

SRI SURENDRA LATH
President, Utkal Pradeshik Marwari Sammelan
Khetrajpur, SAMBALPUR (ORISSA)

SRI VIJAY KEDIA
Secretary, Utkal Pradeshik Marwari Sammelan
SAMBALPUR, Orissa

SRI VIJAY GUJARWASAI
W. President, W.B. Pradeshik Marwari Sammelan
KOLKATA

SRI RAMGOPAL BAGLA
Secretary, W.B. Pradeshik Marwari Sammelan
KOLKATA

EXECUTIVE COMMITTEE MEMBERS

SRI ARUN GUPTA
KOLKATA

SRI GEETESH SHARMA
KOLKATA

SRI SHAMBHU CHOUDHARY
KOLKATA

SRI JUGAL KISHORE JAITHALIA
KOLKATA

SRI DWARKA PRASAD DABRIWAL
KOLKATA

SRI PRAHLAD RAI AGARWAL
KOLKATA

SRI RAM PAL AGARWAL "NUTAN"
PATNA, Bihar

SRI RAVINDRA KUMAR LADIA
KOLKATA

SRI SAJJAN BHAJANKA
KOLKATA

SHRI SHRAWAN TODI
KOLKATA

SRI RAJENDRA KHANDELWAL
KOLKATA

SHRI SHYAMLAL DOKANIA
KOLKATA

SRI BABU LAL DANANIA
KOLKATA

SRI BALARAM SULTANIA
CHAIBASA (Jharkhand)

DR. JAI PRAKASH SHANKAR LAL
Basamat Nagar (Maharashtra)

SRI SUBIR PODDAR
KOLKATA

SRI MAUJI RAM JAIN
BALANGIR, Kantabanji (Orissa)

SRI JAGADISH CHANDRA N.MUNDRA
KOLKATA

SRI SANTOSH KUMAR SARAF
KOLKATA

SHRI MAMRAJ AGARWAL
KOLKATA

SRI SANTOSH KUMAR AGARWAL
RAIPUR

SRI VISHWAMBHAR NEWAR
KOLKATA

SRI CHIRANJEE LAL AGARWAL
KOLKATA

SRI SADHU RAM BANSAL
KOLKATA

SRI VISHWANATH SINGHANIA
KOLKATA

SRI BASANT MITTAL
Ramgarh, Jharkhand

SRI BAL KRISHNA MAHESWARI
KOLKATA

SRI BISHWAMBHAR DAYAL SUREKA
KOLKATA

SRI ATUL CHURIWAL
KOLKATA

SRI OMKARMAL AGARWAL
GUWAHATI (Assam)

SRI NARAYAN JAIN
KOLKATA

SRI NAWAL JOSHI
KOLKATA

SRI PRAKASH CHAND CHANDALIA
KOLKATA

SRI BANSHI LAL BAHETI
HOWRAH

SRI BIRENDRA PRAKASH DHOKA
JAINA (MAHARASHTRA)

SRI HARI PRASAD BUDHIA
KOLKATA

SRI SATISH DEORAH
KOLKATA

SRI VISHWANATH PRASAD KAHNANI
KOLKATA

SRI BISHWANATH MAROTHIA
ROURKELA, Sundergarh, Orissa

SPECIAL INVITEE

SRI DHARAM CHAND AGARWAL
KOLKATA

SRI MUKUND DAS MAHESWARI
JABALPUR, MADHYA PRADESH

SRI NARAIN PRASAD DALMIA
KOLKATA

SMT. RACHNA NAHATA
KOLKATA

SRI SITARAM AGRAWAL
KOLKATA

SRI GHANSHYAM DAS AGARWAL
KOLKATA

SRI NANDKISHORE AGARWAL
KOLKATA

SRI R.S.GOENKA
KOLKATA (W.B.)

SRI RAMNATH JHUNJHUNWALA
KOLKATA

SRI VIJAY KUMAR MAN (Advocate)
HAIBARGAON, NAUGAON (ASSAM)

NATIONAL STANDING COMMITTEE (2008-10)

NATIONAL OFFICE BEARERS

SRI NANDLAL RUNGTA
NATIONAL PRESIDENT, AIMF
CHAIBASA -833 201, JHARKHAND

SRI RAM AWATAR PODDAR
National General Secretary, AIMF
KOLKATA - 700001

SRI HARI PRASAD KANORIA
National Vice President, AIMF
KOLKATA - 700 017

SRI RAJ K.PUROHIT
National Vice Prsident, AIMF
MUMBAI - 400 002 (Maharashtra)

SRI GANESH PRASAD KANDOI
National Vice President, AIMF
CUTTACK - 753 003 (Orissa)

SRI BADRI PD.BHIMSARIA
National Vice President, AIMF
PATNA - 800 001

SRI OM PRAKASH KHANDELWAL
National Vice President, AIMF
GUWAHATI - 781 005, ASSAM

SRI RAMVILASH SABOO
National Vice President, AIMF
HYDERABAD - 500 001 (A.P.)

SRI OMPRAKASH PODDAR
Joint General Secretary, AIMF
KOLKATA - 700 007

SRI ATMARAM SONTHALIA
National Treaserer, AIMF
KOLKATA - 700 001

SRI SANJAY HARLALKA
Joint General Secretary, AIMF
KOLKATA - 700 006

SUB-COMMITTEE PRESIDENTS

SRI BISHWANATH BHUWALKA
Membership Sub-Committee
KOLKATA

SRI DWARKA PRASAD DABRIWAL
Building Sub-Committee
KOLKATA

SRI NANDKISHORE JALAN
Advisory Sub-Committee
KOLKATA

Sri Onkarmal Agrawal
Samajik Samrasta Samiti
GUWAHATI

SRI PRAHLAD RAI AGARWAL
Higher Education Sub-Committee
KOLKATA

SRI RATAN LAL SHAH
Rajasthani Bhasha Sub-Committee
KOLKATA

SRI RAVINDRA KUMAR LADIA
Directory Sub-Committee
KOLKATA

SRI JUGAL KISHORE JETHALIA
Rajnaitik Chetna Sub-Committee
KOLKATA

SRI NAND LAL SINGHANIA
Constitution Amendment Sub-Committee
KOLKATA

MEMBERS

SRI ARVIND BIYANI, KOLKATA
SRI DILIP KUMAR GOENKA, KOLKATA
SRI GOVINDRAM AGARWAL, KOLKATA
SRI KAILASH PATI TODI, HOWRAH
SRI OM LADIA, KOLKATA
SRI PREM CHAND SURELIA, HOWRAH
SRI VISHWANATH SARAF, KOLKATA
SRI BANWARI LAL SOTI, KOLKATA
SRI GHANSHYAM SHARMA, HOWRAH
SRI GOVIND PRASAD SHARMA, KOLKATA
SRI KRISHNA KUMAR DOKANIA, KOLKATA
SRI OMPRAKASH AGARWAL, KOLKATA
SRI RAMNIWAS SHARMA (CHOTIA), KOLKTA
SRI VIJAY KUMAR GUJARWASIA, KOLKATA
SRI CHAMPALAL SARAWGI, KOLKATA
SRI GOPI RAM DHUWALIA, KOLKATA
SRI JAIGOVIND INDORIA, KOLKATA
SRI MUKUND RATHI, KOLKATA
SRI PRADIP DHEDIA, KOLKATA
SRI SUBHASH MURARKA, KOLKATA
SRI VISHWANATH CHANDAK, KOLKATA

ADVISORY SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI NAND KISHORE JALAN, Chairman
Ex-National President (AIMF)
KOLKATA

SRI BHANI RAM SUREKA
Ex-National General Secretary (AIMF)
KOLKATA

SRI SITA RAM SHARMA
Ex-National President, AIMF
KOLKATA

SRI MOHAN LAL TULSIAN
Ex-National President (AIMF)
KOLKATA

SRI HANUMAN PRASAD SARAWAGI
Ex-National President (AIMF)
RANCHI (Jharkhand)

SHRI HARI SHANKAR SINGHANIA
Ex-National President (AIMF)
NEW DELHI

SRI RATAN LAL SHAH
Ex-National General Secretary(AIMF)
KOLKATA

BUILDING SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI DWARIKA PRASAD DABRIWAL, Chairman, KOLKATA

SRI H.P.BUDHIA, KOLKATA
SRI P.R.AGARWAL, KOLKATA
SRI S.TODI, KOLKATA
SRI B.D.SUREKA, KOLKATA
SRI H.P.KANORIA, KOLKATA
SRI RAVINDRA CHAMARIA, KOLKATA
SRI SAJJAN BHAJANKA, KOLKATA
SRI BANWARI LAL SOTI, KOLKATA
SRI H.V.NEOTIA, KOLKATA
SRI R.S.AGARWALA, KOLKATA

CONSTITUTION AMENDMENT SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI NAND LAL SINGHANIA, Chairman, KOLKATA
SRI GOPAL AGARWAL, KOLKATA
SRI BALRAM SULTANIA, CHAIBASA
SRI SITA RAM SHARMA, KOLKATA
SRI KAMAL NOPANI, PATNA
SRI G.P.DALMIA, JHARKHAND
SRI RATAN LAL SHAH, KOLKATA
Dr. S.S.HARLALKA, GUWAHATI

DIRECTORY SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI RAVINDRA KUMAR LADIA, Chairmanm KOLKATA
SRI BAL KISHAN MAHESHWARI, KOLKATA
SRI K..P.TODI, HOWRAH
SRI PURANWAL TULSYAN, KOLKATA
SRI BABULAL DHANAMIA, KOLKATA
SRI CHAMPALAL SARAWGI, KOLKATA
SRI PRADEEP DHEDHIA, KOLKATA
SRI RAJENDRA KHANDELWAL, KOLKATA
SRI BIMAL CHOWDHARY, KOLKATA
SRI DILIP GOENKA, KOLKATA
SRI PANKAJ BANKA, KOLKATA
SRI SATISH DEORA, KOLKATA

HIGHER EDUCATION SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI PRAHLAD RAI AGRAWAL, Chairman, KOLKATA
SRI HARIKISHAN CHOUDHARY, KOLKATA
SRI R.S.GOENKA, KOLKATA
SRI SAJJAN BHAJANKA, KOLKATA
SRI B.D.SUREKA, KOLKATA
SRI M.R. AGARWAL, KOLKATA
SRI S.L.DOKANIA, KOLKATA
SRI KAMAL NOPANI, PATNA
SRI H.P.KANORIA, KOLKATA
SRI RAMNATH JHUNJHUNWALA, KOLKATA
SRI SANTOSH SARAF, KOLKATA
SRI RAJESH SIKARIA, PATNA

MEMBERSHIP SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI B.N.BHUWALKA, Chairman, KOLKATA
SRI BISWANATH SARAF, KOLKATA
SRI MUKUND RATHI, KOLKATA
SRI SUBIR PODDAR, KOLKATA
SRI BHAGWATI PRASAD JALAN, KOLKATA
SRI DHARAMCHAND AGARWAL, KOLKATA
SRI RAMNIWAS SHARMA (CHOTIA), KOLKATA
SRI TARACHAND PATODIA, KOLKATA
SRI B.N.SINGHANIA, KOLKATA
SRI PRAKASH PASARI, CHAIBASA

RAJASTHANI BHASHA SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI RATAN SHAH, Chairman, KOLKATA
SRI HARI KISHEN.AGARWAL, ROURKELA
SRI NAWAL JOSHI, KOLKATA
SRI SHAMBHU CHOWDHARY, KOLKATA
SRI BISHWAMBHAR NEWAR, KOLKATA
SRI JUGAL KISHORE JETHALIA, KOLKATA
SRI PRAKASH CHANDALIA, KOLKATA
SRI VIVEK GUPTA, KOLKATA
SRI GITESH SHARMA, KOLKATA
SRI MAHESH JALAN, PATNA, Bihar
SRI RADHESHYAM.AGARWAL, JAMSHEDPUR

RAJNAITIK CHETNA SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI JUGAL KISHORE JAITHALIA, Chairman, KOLKATA
SRI DILIP KR. MANSUKHLAL GANDHI, AHMEDNAGAR
SMT. MEENADEVI PUROHIT, KOLKATA
SRI OMKARMAL AGARWAL, GUWAHATI
SRI SANWARMAL BHIMSARIA, KOLKATA
SRI ARUN GUPTA, KOLKATA
SRI DINESH BAJAJ, KOLKATA
SRI NAND KISHORE AGARWAL, KOLKATA
SRI SANTOSH AGARWAL, CHHHATISGARH
SRI SHISHIR BAJORIA, KOLKATA
SRI BINOD KUMAR AGARWAL, JHARKHAND
DR. JAI PRAKASH SHANKAR LAL MUNDRA, MAHARASTRA
SRI OMPRAKASH PODDAR, KOLKATA
SRI RAM PAL AGARWAL NUTAN, PATNA
SRI SURENDRA LATH, KHETRAJPUR

SAMAJIK SAMRASTA SUB-COMMITTEE (2008-10)

SRI OMKARMAL AGARWAL, Chairman, GUWAHATI
SRI GOVIND SHARMA, KOLKATA
SRI OM LADIA, KOLKATA
SRI B.C.PODDAR, RANCHI, Jharkhand]
SRI JAIGOVIND INDORIA, KOLKATA
SRI P.C.SURELIA, HOWRAH
SRI OM PRAKASH AGRAWAL, KOLKATA
SRI BISHWANATH KAHANANI, KOLKATA
SRI KRISHNA KUMAR SHARMA, KOLKATA
SRI PUSHKAR LAL .KEDIA, KOLKATA

PLATINUM JUBILEE CELEBRATION COMMITTEE (2008-10)

Shri Sitaram Sharma, Immediate Past President
Shri Nand Kishore Jalan, Past President
Shri Hari Shankar Singhania, Past President
Shri Hanuman Prasad Saraogi, Past President
Shri Mohanlal Tulsian, Past President
Dr. Ram Bilash Saboo, Andhra Pradesh
Shri Onkarmal Agarwal, Assam
Shri Vijay Kumar Manglunia, Assam
Smt. Pushpa Chopra, Bihar
Shri Ram Dayal Maskara, Bihar
Shri Dasrath Gupta, Bihar
Shri Dwarka Prasad Todi, Bihar
Shri Ram Avtar Poddar, Bihar
Shri Santosh Agarwal, Chattisgarh
Shri Shyam Soni, Delhi
Shri Basudeo Budhia, Jharkhand
Shri Bhagchand Poddar, Jharkhand
Shri Murlidhar Kedia, Jharkhand
Shri Prahladrai Agarwal, Kolkata
Shri Hari Prasad Budhia, Kolkata
Shri Bishwambher Dayal Sureka, Kolkata
Shri Sajjan Bhajanka, Kolkata
Shri Chiranjilal Agarwal, Kolkata
Shri Santosh Saraf, Kolkata
Shri Rajendra Khandelwal, Kolkata
Shri Dwarka Prasad Dabriwal, Kolkata
Shri Ratan Shah, Kolkata
Shri B.R. Sureka, Kolkata
Shri Dharam Chand Agarwal, Kolkata
Shri Inder Chand Sancheti, Kolkata
Shri Pradip Dhedia, Kolkata
Shri Ramesh Gopikishan Bang, Maharashtra
Shri Raj K. Purohit, Maharastra
Shri Mukunddas Maheshwari, Madhya Pradesh
Shri Maujiram Jain, Orissa
Shri Balkrishna Goenka, Tamilnadu
Shri Ramesh Morolia, Uttar Pradesh
Shri Anil Jajodia, Uttar Pradesh
Shri Bishwanath Bhuwalka, West Bengal

And

Ex-Officio Member, Office-bearers of
All India Marwari Federation &
President & General Secretary of State Committee

सम्मेलन के नये आजीवन सदस्यों का स्वागत

नाम : **श्री पवन कुमार चाण्डक**
कार्यालय का पता :
पुलिस लाईन रोड
यूरोपियन क्वार्टर्स
चाईबासा, प.सिंहभूम, झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९४३११३१३५१

नाम : **श्री अमित रुँगटा**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– शुभम ट्रेडर्स
बड़ा निमडीह
चाईबासा–८३३२०१, झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९४३११५३५२१

नाम : **श्री सुशील चौमाल**
कार्यालय का पता :
शुभलक्ष्मी जैन मार्केट
चाईबासा–८३३२०१
झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९४३१७६२९१५

नाम : **श्री राज कुमार मुँधड़ा**
कार्यालय का पता :
रूपरंग, सदर बाजार
चाईबासा–८३३२०१, झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९९५५३३०४४०

नाम : **श्री पुरुषोत्तम शर्मा**
कार्यालय का पता :
एस.पी.जी. मिशन उ.विद्यालय
चाईबासा–८३३२०१
प.सिंहभूम, झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९४३१११००९७

नाम : **श्री सुनील रुँगटा**
कार्यालय का पता :
अमला टोला
चाईबासा–८३३२०१
झारखण्ड
मोबाईल नं.–०९२३४८६७६६४

नाम : **श्री राकेश कुमार बुधिया**
कार्यालय का पता :
मेसर्स–रश्मि एजेंसी
शुभम चौक, टुगंरी
पोस्ट–चाईबासा–८३३२०१
मोबाईल – ०९४३१११००७८

नाम : **श्री विष्णु पोद्दार**
कार्यालय का पता :
तिरुपति पावडर कॉस्टिग्स
१४७/ए/२, गिरीश घोष रोड
घुसुड़ी हावड़ा–७११११०७
मोबाईल नं.– ०९८३१४२१४२१

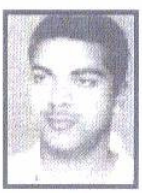

नाम : **श्री नरेश सारस्वत (मंडिया)**
निवास का पता :
मकान संख्या ३७१८
नाहरगढ़ थाने के पास
पुरानी बस्ती, जयपुर, राजस्थान
मोबाईल नं.–०९३५१६२७८२६

नाम : **श्री अभिषेक तुगनावत**
कार्यालय का पता :
मार्फत– श्री विनय झैलावत, एडवोकेट
३९, सिक्ख मोहल्ला राज अपार्टमेंट
प्रथम तल्ला, गुरुद्वारे के पीछे, इन्दौर–४५२००७
मोबाईल नं.–०९४२५०७०५१४

नाम : **श्री मधुसूदन शुक्ला**
कार्यालय का पता :
८, पंचवटी नगर
वायरलेस आफिस के पास
एरोड्रम रोड, इन्दौर–४५२००५
मोबाईल नं.–०९८२७३४९५००

नाम : **श्री सुन्दर लाल दुग्गड़**
कार्यालय का पता :
मेसर्स– आर.डी.बी. इण्डस्ट्रीज लि.
८/१, लाल बाजार स्ट्रीट, रुम. नं.–१०
प्रथम तल्ला, कोलकाता–७०० ००१
मोबाईल – ०९८३००३२०२१

IISD

A Gateway to Careers

SREI Foundation

FOR GRADUATES
THE ULTIMATE PROFESSIONAL EDGE

MBA

BBA BCA

EXCELLENT OPPORTUNITY FOR MASTER DEGREE IN MANAGEMENT WHILE WORKING IN OWN CAREER.

CONVENIENT WEEKEND CLASSES AVAILABLE

Specialisations offered

- Marketing
- Finance
- Human Resource Management
- Information Technology

Other Major Courses Conducted By IISD

- Languages Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit and Hindi.
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examination (Both Preliminary and Main).
- WBCS (Executive & Judicial) and Allied Services Examination (Prelims and Main).
- Company Secretary Courses (Foundation, Intermediate and Final).
- P.G Medical Entrance including MD / MS, M.R.C.P., D.N.B., etc.

FACILITIES

- Most convenient and well-connected location in Salt Lake, next to the Easter Zonal Cultural Centre.
- AC Class Rooms.
- Eminent highly qualified and experienced faculty.
- Tutorials, personalized coaching, seminars and workshops.

Degree conferred by Punjab Technical University approved by UGC, Ministry of HRD, GoI, and DEC.

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata 700 106

Ph.: 2335 2378/2861, Fax: 2335 2379

E-Mail: info@iisdedu.in Website : www.iisdedu.in

मंच दर्शन की प्राण प्रतिष्ठा

ज्ञानज्योति यात्रा का शुभारंभ

- प्रमोद्र सराफ, संस्थापक अध्यक्ष
अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच अपने रजत जयंती वर्ष का उत्सव मना रहा है। उत्सव भारतीय एवं मारवाड़ी संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। उत्सव माध्यम होते हैं– जीवन में उत्साह संचार के। रजत जयंती समिति ने इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस उत्सव को मानने के क्रम में १०० दिवसीय **ज्ञान ज्योति यात्रा** का शुभारंभ, मंच के उद्गमस्थल गुवाहाटी शहर से मच की जननी गुवाहाटी शाखा के स्थापना दिवस ९–१० अक्टूबर को किया है, जो मंच संस्कृति एवं मंच मूल्यों को दर्शाता है। मंच संस्कृति है–कृतज्ञता के भावों की। मंच मूल्य है–स्मृतियों को सजीव बनाना। इस यात्रा की १०० दिवसीय अवधि परिचायक है : मंच शाखाओं के सुदृढ़ आधार की एवं रजत जयंती समिति के नेतृत्व की शाखा नेतृत्व में अगाध विश्वास की। १०० दिवसीय यात्रा के आयोजन की कल्पना राजनैतिक दलों को भी दुष्कर प्रतीत होती है। ऐसी यात्रा की कल्पना, किसी सामाजिक संगठन द्वारा करना, निश्चित रूप से एक साहसिक कार्य है। इस साहसिक कार्य का बीड़ा उठाने हेतु रजत जयंती समिति के नेतृत्व वर्ग का अभिनन्दन।

देश के 18 राज्यों से गुजरेगी यह यात्रा

मंच साथी सोच सकते हैं कि इस कार्यक्रम का नामकरण **ज्ञान ज्योति यात्रा** क्यों किया गया। इस नाम का चयन सावधानी के साथ किया गया है। चंचलता एवं मनमौजीपन में इस कार्यक्रम का नामकरण नहीं किया गया है। यह नाम प्रतीकात्मक है। प्रतीकों का प्रयोग भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इस कार्यक्रम के नाम में मंच नेतृत्व की कल्पनाऐं छिपी हैं, जिनका अनावरण यात्रा काल में होगा। नाम की प्रासंगिकता इस वातावरण में है, जिसमें यह नाम दिया गया है। यह ऐसा नाम है, जिसके अर्थ को क्षमतानुसार बढ़ाया जा सकता है। जब मंच से जुड़े साथियों का विभाग नाम से हटकर इस नाम में छिपी अन्तर्निहीत भावनाओं की तरफ केन्द्रित होने लगेगा, तब उपरोक्त उल्लेखित 'क्यों' स्वत: धूमिल होने लगेगा। ऐसी साहसिक यात्राओं का नाम शक्तिवान एवं चेतनाशील होना अति आवश्यक है। नाम से प्राप्त होने वाले संकेतों एवं यात्रा के अपेक्षित परिणामों में समानता एवं सामंजस्य है। यह नाम भावनात्मक संबल प्रदान करते हुए इस यात्रा के कठिन कार्यों को सहज बनाना है। उद्देश्यों को सजीव करता है।

मंच नेतृत्व में यात्रा के नाम एवं कार्यक्रमों में मंच दर्शन की प्राण प्रतिष्ठा की है। मंच दर्शन के अंतर्गत वर्णित मंच आधार एवं मारवाड़ी समाज की विरासत को **ज्ञान ज्योति यात्रा** का भी आधार बनाया गया है। मारवाड़ी युवा मंच नेतृत्व एवं शाखाओं ने पिछले २० वर्षों में कृत्रिम अंग प्रदान शिविरों के आयोजन के माध्यम से शारीरिक रूप से अपंग भाई बहिनों की सेवा का ज्ञान अर्जित किया है। **ज्ञान ज्योति यात्रा** न्यौता देती है– उपरोक्त वर्णित ज्ञान के रजत जयंती वर्ष में विशेष उपयोग का न केवल अर्जित ज्ञान के उपयोग का बल्कि इस ज्ञान की अतिवृद्धि का भी। ज्ञानज्योति यात्रा काल में शाखाएं कृत्रिम अंग प्रदान शिविरों का आयोजन कर अपंग भाई बहिनों की जिंदगी की ज्योति जगा सकती है। जिन शाखाओं ने अभी तक यह ज्ञान अर्जित नहीं किया है, वे प्रत्यक्ष अनुभव के माध्यम से इस ज्ञान के अर्जन हेतु ऐसे शिविरों का आयोजन कर सकती हैं। रजत जयंती समिति की योजना है कि **ज्ञान ज्योति यात्रा** की १०० दिवसीय अवधि में कम से कम १०० कृत्रिम अंगप्रदाय शिविरों का आयोजन कर कम से कम ५००० अपंग भाई बहिनों के जीवन में आशादीप जलाए जाएं। हर शिविर में, शाखाओं के अनुरोध पर,२५ कृत्रिम पैर शाखाओं को नि:शुल्क उपलब्ध करवाने की भी रजत जयंती समिति की योजना है। **ज्ञान ज्योति यात्रा** काल में मंच शाखाओं को दिखाना है अपना कर्त्तव्य ज्ञान। निर्णय लेना है शिविरों के आयोजन का **ज्ञान ज्योति यात्रा** एक साथ ऐतिहासिक अवसर प्रदान कर रही है–ज्ञान के उपयोग एवं ज्ञान की अभिवृद्धि का।

मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेन्द्र गुप्ता ने रजत जयंती वर्ष की थीम निर्धारित की है– **''विकलांगता विहीन हो देश हमारा।''** एक संदेश छिपा है इसमें। वह संदेश है कि देश के हर नागरिक का कर्तव्य है कि देश में विकलांगता समाप्त करने हेतु न केवल सचेष्ट हो बल्कि इसे चुनौती के रूप में स्वीकार करे। इस उद्देश्य हेतु अर्थदान एवं श्रमदान करे। पुरानी कहावत है कि बूंद बूंद से घड़ा भरता है। विकलांगता विहीन देश का सपना तभी पूरा हो सकता है, जब हम अपने क्षेत्र के निवासी विकलांग भाई बहिनों को चिन्हित करें व उनकी विकलांगता निवारण हेतु किसी सेवा

भावी संस्था को प्रेरित एवं सक्रिय करें। सुप्रसिद्ध राजस्थानी कवि श्री सीताराम महर्षि की निम्न पंक्तियाँ थीम को बल देती प्रतीत होती हैं।

जिंदगी का हर कदम रख इस तरह प्यारे,
रोशनी का दायरा कुछ और बढ़ जाए।

पोलियो रोग से ग्रसित बच्चों की शल्य चिकित्सा हेतु शिविरों के आयोजन की कला का ज्ञान यद्यपि मंच शाखाओं में सीमित रूप में है। ज्ञान ज्योति यात्रा इस ज्ञान के अर्जन का शाखाओं को सुनहरा अवसर प्रदान कर रही है। पोलियो रोग से ग्रसित बच्चों की शल्य चिकित्सा हेतु मंच के शीर्ष नेतृत्व ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विख्यात हड्डी रोग विशेषज्ञ डॉ. आदिनारायण राव, विशाखापट्टनम के नेतृत्व में देश के १० राज्यों में ज्ञानज्योति यात्राकाल में १० शिविरों के आयोजन का सैद्धांतिक निर्णय लिया है। इन शिविरों के माध्यम से प्राय: १५०० बच्चों की सेवा का लक्ष्य रजत जयंती समिति ने निर्धारित किया है। शाखाओं के शीर्ष नेतृत्व को शीघ्र निर्णय लेना है–इन शिविरों के आयोजन का मंच से जड़ित संपन्न युवा साथियों को इन शिविरों के आयोजन हेतु आवश्यक आर्थिक सहयोग देकर अपना कर्त्तव्यज्ञान प्रकट करना है। इन शिविरों के आयोजन में कमोबेश १ करोड़ रुपयों के व्यय का अनुमान है। मंच नेतृत्व एवं कार्यकर्त्ताओं को इस उद्देश्य हेतु संपन्न समाज बंधुओं से आवश्यक अर्थसंग्रह कर अपने कर्तव्य ज्ञान का निर्वाह करता है। अत: समस्त युवासाथियों को अपनी क्षमतानुसार इस प्रकल्प में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग कर यौवन धर्म का निर्वाह करना है।

सिलीगुड़ी स्थित राष्ट्रीय विकलांग सेवा केन्द्र में पोलियोग्रसित बच्चों की शल्य चिकित्सा हेतु ज्ञान ज्योति यात्रा काल में स्थायी व्यवस्था स्थापित करने का निर्णय भी रजत जयंती समिति के नेतृत्व की पहल पर लिया गया है। आशा है कि प्रस्तावित व्यवस्था का शुभारंभ दि. १७ जनवरी २०१० को सिलीगुड़ी के मंच साथियों द्वारा कर दिया जाएगा। हम समस्त मंच कार्यकर्त्ताओं का दायित्व है कि सिलीगुड़ी में प्रस्तावित इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में अवदान देकर इसे सफल बनाऐं व सिलीगुड़ी के साथियों का उत्साहवर्द्धन करें।

विश्व में १ अक्टूबर विश्व रक्तदान दिवस के रूप में मनाया जाता है। चूंकि ज्ञान ज्योति यात्रा का शुभारंभ अक्टूबर माह में हुआ है एवं मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने रक्तदान कार्यक्रम को मंच के राष्ट्रीय कार्यक्रम की संज्ञा दी है, अत: इस यात्रा काल में शाखाओं द्वारा रक्तदान शिविरों का आयोजन अपेक्षित है। यात्राकाल में कम से कम २५०० ब्लड यूनिट रक्तदान का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। अत: मंच शाखाओं का कर्तव्य है कि रक्तदान कार्यक्रम को विशेष महत्व प्रदान करें।

मारवाड़ी युवा मंच का प्रथम राष्ट्रीय कार्यक्रम है। एम्बुलेंस सेवा, मंच द्वारा यह कार्यक्रम इस समय ग्रहण किया था जब ग्रामों एवं नगरों में ही नहीं बल्कि शहरों में भी रोगियों को एम्बुलेंस सेवाएं सहरूपेण उपलब्ध नहीं थी। मारवाड़ी युवा मंच के इस कार्यक्रम ने मारवाड़ी समाज के सामाजिक कर्त्तव्यबोध को उजागर किया। वर्तमान में २०० से अधिक शाखाओं द्वारा रोगियों को एम्बुलेंस सेवा में उपलब्ध करवाई जा रही है। मारवाड़ी युवा मंच के इस कार्यक्रम में अनेकानेक सेवा संगठनों का ध्यानाकर्षण किया एवं परिणामस्वरूप उन्होंने भी एम्बुलेंस सेवा प्रारंभ की। केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकार भी इस सेवा क्षेत्र में पिछले २–३ वर्षों में अधिक सक्रिय हुई है। अत: विवेक की मांग है कि मारवाड़ी युवा मंच अपने इस कार्यक्रम को ऊपर की ओर उठाकर **मोबाईल ग्रामीण 'चिकित्सा डिस्पेंशरी'** के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा सेवाएं प्रदान करना प्रारंभ करें। इसके शीर्ष नेतृत्व ने ऐसा करने का निर्णय सिलीगुड़ी में आयोजित राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक में ले लिया था। रजत जयंती समिति के नेतृत्व ने ज्ञानज्योति यात्रा काल में इस निर्णय के क्रियान्वयन की योजना बनाई है एवं निश्चित किया है कि देश के कम से कम १० राज्यों में मोबाईल ग्रामीण चिकित्सा वाहनों के माध्यम से ग्रामीण चिकित्सा सुविधाएं प्रारंभ की जायें। आवश्यकतानुसार मंच कार्यक्रमों में बदलाव के ज्ञान को उजागर करता है–यह प्रस्तावित कार्यक्रम।

प्रस्तावित **ज्ञान ज्योति यात्रा** देश के १८ राज्यों से गुजरेगी। प्रतिदिन सैंकड़ों युवा हर कार्यक्रम के अवसर पर एकत्रित होंगे। समाज मनीषी भी इन कार्यक्रमों में उपस्थित होकर मंच साथियों को आशीर्वाद देंगे। मंच का शीर्ष नेतृत्व स्थानीय युवाओं से यात्रा के प्रत्येक स्वागत कार्यक्रम में रूबरू होगा। यह यात्रा मंच के शीर्ष नेतृत्व को अवसर प्रदान करेगी–सामाजिक कुरीतियों एवं रूढ़ियों के विरुद्ध जनमानस के निर्माण हेतु। स्वसुधार की प्रवृत्ति विकसित करने के आह्वान हेतु। इसमें मंच दर्शन में वर्णित मंच भाव पुष्ट होगा।

ज्ञान ज्योति यात्रा काल में विभिन्न शहरों, नगरों एवं ग्रामों में समारोहों के आयोजन की भी योजना है। इन सम्मेलनों में मंच के वरिष्ठ सदस्यों एवं चुनिंदा समाज बंधुओं का सम्मान किये जाने का कार्यक्रम भी निश्चित किया गया है। यह कार्यक्रम वर्तमान में सक्रिय मंच सदस्यों को वरिष्ठ सदस्यों के व्यक्तित्व एवं अवदानों से परिचित करवाते हुए मंच के गौरवशाली इतिहास को उजागर करेगा। इन समारोहों में अनुकरणीय व्यक्तित्व के धनी चुनिंदा समाजबंधुओं का अभिनन्दन कर, इनके द्वारा प्रतिष्ठित मूल्यों एवं संस्कृति को उजागर करते हुए नमन किया जाएगा। ये प्रेरणादायी व्यक्तित्व युवाओं के दिलो दिमाग पर

अमिट प्रभाव छोड़ेंगे एवं हमराही बनने का निमंत्रण देंगे। इस प्रकार ये समारोह ज्ञानेयजनित चेतना उत्पन्न कर ज्ञानप्रवाह का सही माध्यम बनेंगे–ऐसे मेरी अपेक्षा है। इससे मंच शक्ति में वृद्धि होगी। युवापीढ़ी को प्रेरक वातावरण मिलेगा। मंच शाखाओं का कर्तव्य है कि इन समारोहों में अपने क्षेत्र के कम से कम २५ क्षमतावान नए युवकों एवं युवतियों को समारोह स्थल तक लाएं व मंच नेतृत्व का दायित्व होगा कि मंच से अनजुड़े इन युवकों के अन्तर्मन में सामाजिक कर्तव्यों के निर्वाह की ज्योति आलोकित करे तभी वर्णित यात्रा सही मायनों में ज्ञान ज्योति यात्रा सिद्ध होगी एवं मंच दर्शन का **तृतीय सूत्र मंच शक्ति व्यक्ति विकास** पोषित एवं पल्लवित होगा।

यात्रा काल में पुस्तिकाओं एवं स्मारिकाओं के रूप में प्रकाशित मंच साहित्य मंच से संबंधित अनजाने पहलुओं को उजागर कर पाठकों की ज्ञानवृद्धि करेगा। इस साहित्य में मंच से जुड़े साथियों को अपने प्रश्नों के उत्तर प्राप्त होंगे। मंच प्रकाशनों की लोप संस्कृति पुनः उदित मुद्र में दिखाई देगी। मंच इतिहास में नए पृष्ठ जुड़ेंगे व पुराने पृष्ठों के धुंधले पड़ते प्रभावों को पुनः चमक प्राप्त होगी। ये प्रकाशन जहां पीड़ा अभिव्यक्ति का माध्यम बन कर चित्त को शांति प्रदान करेंगे, वहीं मंच शक्ति में इजाफा भी करेंगे। प्रकाशनों के अभाव में मंच से दूर होते पुराने युवा साथी पुनः मंच की तरफ उन्मुख होंगे। **बैद्धिक क्षेत्रों** में मंच विषयों पर चर्चाओं का दौर जीवंतता प्राप्त करेगा। ये प्रकाशन मानसिक विवेक जागृत कर ज्ञानस्रोत कहलाने के अधिकारी होंगे। यात्राकाल में **मंच साहित्य प्रकाशन** की योजना में इस यात्रा के **ज्ञान ज्योति यात्रा** नाम को प्रत्यक्षतः सार्थक सिद्ध करने की क्षमता प्रतीत होती है।

'ज्ञान ज्योति यात्रा' शब्दों का बारंबार उच्चारण इन शब्दों के गहरे अर्थ जानने हेतु जहां उत्प्रेरित करेगा, वहीं सामाजिक सम्मान की चाह रखने वाले तपस्वी व्यक्तित्वों की संख्या में भी वृद्धि करेगा। मंच साथियों एवं समाज मनीषियों की कुंडलिनी शक्तियों का जागरण कर यह यात्रा **सामाजिक सम्मान** एवं आत्म सुरक्षा की चाह कालांतर में पूरी करेगी–ऐसी भी मेरी अपेक्षा है। **मंच दर्शन के इस चतुर्थ सूत्र** के ऊपर प्रभावी कार्य का अवसर प्रदान करती है–यह यात्रा।

जिस सप्ताह में जिस शहर, नगर, ग्राम, में रजत जयंती समारोह आयोजित होने से, उस पूरे समाज सायंकाल मंच कार्यालय के समक्ष एवं क्षेत्र के समस्त निवासियों के घरों के समक्ष दीप प्रज्जवलित किये जाऐं। अधिकतर दीप प्रज्जवलन हेतु स्थानीय नागरिकों को भी प्रोत्साहित किया जाए। यह दीप ज्योति कार्यक्रम जहां भारतीय एवं मारवाड़ी संस्कृति के अनुसार है, वहीं स्थानीय निवासियों में मारवाड़ी समाज एवं मारवाड़ी युवा मंच के बारे में ज्ञानार्जन की चाह पैदा कर राष्ट्रीय एकीकरण का मार्ग प्रशस्त करेगा। **मंच दर्शन का पंचम सूत्र–राष्ट्रीय एकता एवं विकास** यद्यपि **ज्ञान ज्योति यात्रा** के हर कार्यक्रम में परिलक्षित है, परन्तु दीप प्रज्जवलन कार्यक्रम राष्ट्रीय एकीकरण की भावनायें जागृत करने का अच्छा माध्यम बन सकता है, बशर्ते कि स्थानीय समाज बंधुओं को इस कार्यक्रम में सही रूपेण शामिल किया जाए।

इंसान में अच्छाइयाँ उसकी गतिविधियों की देन होती है। मानसिक सुधार के लिये आवश्यक है। इंसान के दिमाग में ज्ञानविद्युत का संचार एवं विचारों की शुद्धता। ज्ञान ज्योति यात्रा आह्वान करती है–ईमानदारी से आत्मचिंतन हेतु। विगत २५ वर्षों में हुई भूलों के स्मरण हेतु। ऐसा आत्मचिंतन हमारे विचारों में शुद्धता पैदा करेगा एवं हमारे मानसिक सुधार का मार्ग प्रशस्त होगा। आत्मचिंतन जनित यह मानसिक सुधार हमारे व्यक्तित्व में निखार लाएगा। ज्ञान की ज्योति जलायेगा। हमारे साधारण नेत्र ज्ञानचक्षु का रूप ले लेंगे। हमारे कान परनिंदा सुनने के लिये इंकार कर देंगे। सहनशक्ति विकसित होगी। क्षोभ एवं विद्रोह की भावनाएं अस्त होंगी। १०० दिवसीय ज्ञानज्योति यात्रा आह्वान करती है, ऐसे आत्मचिंतन का ऐसा आत्मचिंतन इस रजतजयंती वर्ष को ज्ञानज्योति पर्व के रूप में स्मरणीय बना देगा। हमारी अच्छाइयां उभरने लगेंगी। प्रस्तावित ज्ञान ज्योति यात्रा से जुड़े शीर्ष नेतृत्व से आग्रह है कि वे स्वयं भी आत्मचिंतन हेतु मंच से जुड़े हर युवा साथी के लिये प्रेरणा स्रोत बने। मंच का सौभाग्य है कि मारवाड़ी युवा मंच के प्रवर्तक श्री अरुण बजाज रजत जयंती समिति के चेयरमैन हैं। इस रजत जयंती वर्ष में मंच साथियों को उनसे अपेक्षा है कि रजत से स्वर्ण की मंच यात्रा का निस्कंटक मार्ग सुनिश्चित करें।

अग्नि पुराण में कहा गया है कि बच्चे भगवान का दर्शन मिट्टी या लकड़ी आदि से बने हुए भगवाननुमा खिलौनों में करते हैं। औसत बुद्धि के व्यक्ति का भगवान पवित्र जल धाराओं में रहता है। तपस्वी व्यक्तियों का भगवान दिव्यमंडल में स्थित होता है। विवेकी व्यक्तियों का भगवान इनके स्वयं के अंदर ही रहता है। ऐसी स्थिति ज्ञान की भी है। अधिकांश व्यक्ति अनुसरण कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। चंद व्यक्ति श्रवण, अध्ययन एवं मनन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त करते हैं। ज्ञान के प्रचार प्रसार हेतु वाणी लोकप्रिय माध्यम है। लेकिन कर्म प्रेरित ज्ञान सर्वोपरि है।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध कवि श्री सीताराम महर्षि की निम्न पंक्तियों में अन्तर्निहीत ज्ञान देखें।

पौध प्यार की यहां हर जगह लगाओ तुम,
आग जो घृणा की है प्यार से बुझाओ तुम।
दूर हो गये हैं जो प्यार से मिलाओ तुम,
विष चढ़ा संदेह का प्यार से उतारो तुम।।

जनकवि हरीश भादानी को श्रद्धांजलि

महाप्रयाण

जनकवि, वरिष्ठ गीतकार
हरीश भादानी नहीं रहे.....

पिछले कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे जाने माने जनवादी कवि हरीश भादानी का बीकानेर में उनके छबीली घाटी स्थित निवास स्थल पर २ अक्टूबर की सुबह निधन हो गया। आप ७६ वर्ष के थे। उनके परिवार में पत्नी एक पुत्र और तीन पुत्रियां हैं, जिनमें एक सरला माहेश्वरी पश्चिम बंगाल से राज्यसभा सदस्य रह चुकी हैं। बीकानेर में ११ जून १९३३ को जन्मे हरीश भादानी जनवादी लेखक संघ के प्रदेश अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रहे। उन्होंने १९७३ तक वातायन पत्रिका का सम्पादन किया। उनके कविता संग्रह में 'एक अकेला सूरज खेले', अधूरे गीत, हंसिनी एक याद की, सपन की गली आदि काफी लोकप्रिय हुए। श्री भादानी को राजस्थान हिन्दी साहित्य अकादमी ने मीरा पुरस्कार, के.के बिड़ला फाउंडेशन ने बिहारी पुरस्कार, पश्चिम बंगाल सरकार ने राहुल पुरस्कार तथा महाराष्ट्र सरकार ने प्रियदर्शी पुरस्कार से सम्मानित किया था। श्री भादानी के निधन पर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने गहरा शोक व्यक्त किया। हमारी तरफ से आपको श्रद्धासुमन अर्पित। – सम्पादक

जनकवि हरीश भादानी जी को ३ अक्टूबर २००९ को बीकानेर में हजारों लोगों ने अश्रुपूरित नयनों से अंतिम विदाई दी। उनकी अंतिम विदाई के मौके पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलौत श्रद्धांजलि देने जयपुर से सीधे बीकानेर पहुँचे। हरीश जी की अंतिम इच्छा थी कि उनका अंतिम संस्कार न करके मेडीकल कॉलेज को देह दान कर दिया जाए। उनकी इसी इच्छा के अनुरूप उनका देहदान बीकानेर मेडीकल कॉलेज को किया गया। यहां पर दो बड़े हिन्दी दैनिकों की अंतिम यात्रा की रिपोर्ट पेश करना चाहता हूँ। यह रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण पक्ष की ओर ध्यान खींचती है कि हिंदी में हरीशजी विरल विभूति थे, उन्होंने सभी वर्गों और जातियों के लोगों में अपनी साख कायम की थी और पूरा राजस्थान उन्हें प्यार करता था। उनकी शवयात्रा में जिस तरह हजारों लोगों का सैलाब उमड़ा वह स्वयं में इस बात का प्रतीक है कि वे सचमुच में जनगायक और स्वतंत्रचेता, मुक्त पुरुष थे। स्वतंत्रचेता, मुक्तपुरुष होने के नाते ही उन्हें आरएसएस से लेकर सीपीएम,कांग्रेस से लेकर समाजवादी विचारधारा के लोग समान रूप से प्यार करते थे। इसके अलावा बड़े पैमाने पर जनसाधारण की उनकी शवयात्रा में उपस्थिति को देखकर रवीन्द्रनाथ टैगोर की अंतिम यात्रा का दृश्य याद आ रहा था,रवीन्द्रनाथ की मौत पर जिस तरह का जनसैलाब कलकत्ते में उमड़ा था ठीक वैसा ही जनसैलाब बीकानेर की सड़कों पर ३ अक्टूबर २००९ को दिखाई दिया।

राजस्थान पत्रिका ने लिखा–

"बीकानेर। रोटी नाम सत है, खाये सो मुक्त है, मैंने नहीं कल ने बुलाया है जैसे सैंकडों गीतों के जरिए जागृति की अलख जगाने वाले जन कवि हरीश भादाणी की देह उनकी इच्छा के मुताबिक आज सरदार पटेल मेडिकल कॉलेज प्रशासन को सौंप दी गई। उनका शुक्रवार तड़के निधन हो गया था। भादाणीजी के पार्थिव शरीर को शहर के छबीली घाटी स्थित उनकी पुत्री कविता व्यास के निवास पर दर्शनार्थ रखा गया था, जहां सैंकडों लोगों ने पहुंच कर पुष्पांजलि अर्पित की।

दैनिक भास्कर ने लिखा

"बीकानेर शहर की जिन गलियों से वे कभी पैदल ही कंधे पर झोला डाले निकलते दिखाई देते थे, उन्हीं गलियों में आज हजारों लोग उनके साथ थे। फर्क सिर्फ यह था कि आज कोई उन्हें 'रोटी नाम सत् है, खाये वो मुक्त है..' सुनाने के लिए नहीं कह रहा था बल्कि सभी इस गीत को गा रहे थे।

– जगदीश्वर चतुर्वेदी

जनकवि हरीश भादानी को श्रद्धांजलि

हरीश भादानी:
विद्रोही रचनाशीलता के सतरंगी आयामों का एक बड़ा कवि

– अरुण माहेश्वरी

(हिंदी साहित्य में हरीश भादानी का क्या अवदान रहा है, इसकी एक तस्वीर श्री अरुण माहेश्वरी के निम्न लेख से मिलती है जिसे उन्होंने हरीश भादानी की 75वीं सालगिरह के मौके पर बीकानेर शहर में हुए विशाल समारोह की एक गोष्ठी में पेश किया था। –संपादक)

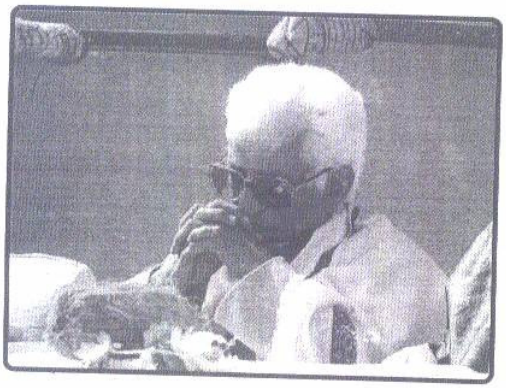

हरीश जी, उनके संपूर्ण व्यक्तित्व और कृतित्व से अपने लंबे और गहरे परिचय के चलते उनके बारे में कुछ भी लिखना जितना आसान और एक हद तक उबाऊ जान पड़ता है, उतना ही कोरे पिष्टपेषण के बजाय लीक से हट कर नया कुछ खोजने-कहने का आग्रह इस सारे मामले को थोड़ा चुनौतीपूर्ण भी बना देता है। ६०-७० के दशक के रूमानी, 'पवित्र पापी' की ओज के साथ अपने एक खास प्रभा-मंडल वाले प्रेम और विद्रोह के आपाद-मस्तक कवि हरीश भादानी को कौन नहीं जानता। कवि सम्मेलनों में उनके ठाठ को देख कर किसी ने उन्हें राजस्थान का नीरज और बच्चन कहा था, तो उनसे दो कदम आगे बढ़ कर बारीक मिजाज आधुनिक कवि अज्ञेय ने कविता की श्रेष्ठता का परचम लहराते हुए कविता की इस अनोखी गायकी के लिये उनकी वाह-वाही की थी।

लेकिन ये सब बातें लगभग चार दशक पुरानी हो चुकी हैं। ये बातें एक हद तक आख्यानों और शायद स्मृतियों का रूप ले चुकी हैं। जन-आंदोलनों की अग्रिम पांत में खड़े एक जन कवि के रूप में भी हरीश जी की पहचान बने तीन दशक से ज्यादा का समय बीत चुका है। 'वातायन' के संपादक हरीश जी की यादें भी ६० से लेकर प्रायः ८० के जमाने तक चले जोशीले लघु पत्रिका आंदोलन की यादों की तरह धुंधला गयी हैं। उलट कर कुछ यूं भी कहा जा सकता है कि न वह युग रहा, न वैसे ठेले-नुक्कड़ और इसीलिये न रही 'ऐ मुहब्बत जिंदाबाद' वाली 'जांबाजी' की मदहोश कर देने वाली किस्सागोई की अहमियत। 'अधूरे गीत'(१९५९), 'सपन की गली'(१९६१) के गीत और 'हंसिनी याद की'(१९६२) की रुबाइयां, जिनकी जुबान पर तब थे, आज भी हैं और आगे भी सदा उनके फुरसत के क्षणों के खालीपन को अनोखी मानवीय अनुभूतियों से आबाद रखेंगे। ये मानव स्वभाव की मूलभूत वृत्तियों, साहित्य के स्थायी सत्यों की तरह लंबे-लंबे काल तक लोगों को रिझायेंगे, रुलायेंगे और अपने में डुबायेंगे भी। और कहना न होगा कि हरीश जी के इस स्थायी सत्य को कभी कोई नकार नहीं पायेगा। किसी उद्यमी के हाथों पड़ कर आधुनिक तकनीक से समृद्ध संगीत के साथ इनका फिर जन्म और संस्करण हो तो, अचरज की बात नहीं है। कहा जा सकता है कि हरीश जी के साहित्य-शैशव की ये रचनाएं शैशव की मासूमियत और ताजगी के साथ ही कवि हरीश भादानी के व्यक्तित्व का एक निश्चित परिचय देती हैं, जो नैरंतर्य के बिल्कुल पतले धागे की तरह ही क्यों न हों, उनके परवर्ती दिनों की रचनाओं के आवेग और विस्तार के मर्म को समझने में किसी के लिये भी सहायक बन सकती हैं। प्रेम की विस्मृतियों और सुधियों के एक विस्तृत फलक में कहीं लोरी सुनाती तो कहीं कदम-ताल मिलाती अनगिनत धुनों के उस रचना संसार को सिर्फ रूमानी बता कर खारिज नहीं किया जा सकता है। एक कठोर सामंती परिवेश में वह किसी मुक्त मन के विद्रोही

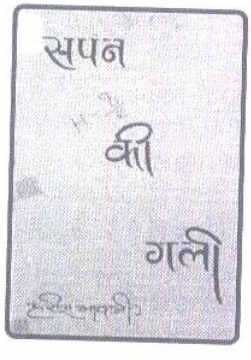

जनकवि हरीश भादानी को श्रद्धांजलि

राजस्थान पत्रिका

2 अक्टूबर का तापमान

अधिकतम 40.5°C न्यूनतम 28.8°C आर्द्रता 25%

2

जस्ट बीकानेर

मौन हो गया महाकाव्य

समय की गति...

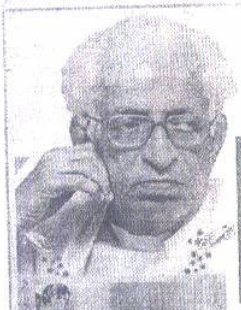

टूट गए चेतना के तंतु

साहित्य के प्रतिरूप

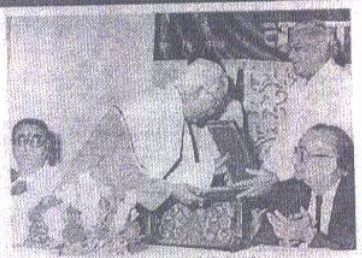

" रोटी नाम सत है "

जनकवि की प्रमुख पुस्तकें

इन्होंने दी श्रद्धांजलि

निधन पर शोक

व्यक्तिगत क्षति

देहदान की यात्रा

एक उज्ज्वल अध्याय का पटाक्षेप

स्वरों का ऐसा प्रवाह था जिसमें डुबकी लगा कर आज भी बड़ी आसानी से मानवीय और जनतांत्रिक संवेदनाओं के पुण्य को अर्जित किया जा सकता है। जिन्होंने भी हरीश जी के पहले गीत संकलन 'अधूरे गीत' के 'तेरी मेरी जिन्दगी का गीत एक है', 'रही अछूती सभी मटकियां', 'सभी सुख दूर से गुजरे', प्रिये अधूरी बात' तथा दूसरे संकलन 'सपन की गली' के 'सात सुरों में बोल', 'सोजा पीड़ा मेरे गीत की' की तरह के गीतों को सुना है, उनके प्रभाव से मुक्त नहीं हो सकते हैं। प्रेम और सौंदर्य के ये गीत अपने बोल और अपनी धुनों से भी किसी भी युवा मन के प्रिय क्षणों के साथी बन सकते हैं।

हरीश जी का यह रचना संसार हमारी तो साहित्यिक रुचियों के जन्म काल और युवा वय के नितांत आत्मीय और बेहद आनंददायी क्षणों की स्मृतियों से जुड़ा हुआ है और सही कहूं तो अपने साहित्य-संस्कार का आधार है। इसीलिये इन रचनाओं के सम्मोहक वृत्तांत में मैं अपने को खोना नहीं चाहता। अगर इनकी ओर कदम बढ़ा दिये तो न जाने कहां का कहां चला जाऊं और इस भटकाव के चलते जिस खास बात की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिये मैंने इस टिप्पणी को लिखने का निश्चय किया, शायद उसे ही भूल जाऊं।

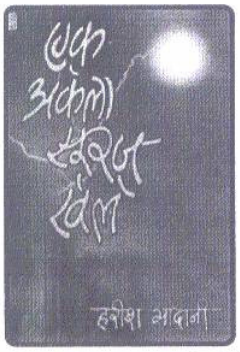

न मैं 'सुलगते पिंड'(१९६६) और 'एक उजली नजर की सूई'(१९६६) की महानगरीय छींक लगी संवेदनाओं की कविताओं और गीतों की ही बात करना चाहता हूं, जो तब भी नगर जीवन के अजनबीपन को अपनी छैनी के प्रहारों या फिर आत्मीय आलिंगनों से दूर करने और जिंदगी की जिल्द के किसी नये सफे को पढ़ने का सपना पाले हुए थी। यह समय था हरीश जी के मूल विद्रोही तेवर पर कम्युनिस्ट दर्शन के मुलम्मे की चमक का। अब विद्रोही प्रेमी 'ड्योढ़ी के रोज ब रोज शहर जाने और कारखाने के सायरन की सीटी से बंधी एक नियत जिंदगी जीने के विच्छिन्नताबोध की पीड़ा के साथ 'क्षण-क्षण की छैनी' से काट कर चीजों को परखने की तरह कड़े से कड़े प्रश्नों से व्यवस्था को बींधने वाले विद्रोही मजदूर से एकात्म हो जाता है। 'एक उजली नजर की सुई' में उनके इस दौर के कई अमर गीत संकलित हैं। जैसे - 'मैंने नहीं, कल ने बुलाया है', 'क्षण-क्षण की छैनी से काटो तो जानूं', 'ऐसे तट हैं क्यों इन्कारें', संकल्पों के नेजों को और तराशो', 'थाली भर धूप लिये' और 'सड़क बीच चलने वालों से'। ये सघन और जटिल महानगरीय बोध के साथ नये, बेहतर और मानवीय समाज के निर्माण की बेचैनी के गीत हैं। इन गीतों में उकेरे गये आधुनिक भावबोध के बिंब गीत और कविता के बीच श्रेष्ठता की बहस को बेमानी कर देने के लिये काफी है।

बहरहाल, मुझे लगता है कि यह वैचारिक प्रतिबद्धता, महानगरीय अवबोध और झकझोर देने वाले प्रश्नों को उठाने की बेचैनी की कहानी सत्तर-बहत्तर तक आते-आते कुछ खत्म सी होती दिखाई देती है। 'एक उजली नजर की सुई' का प्रकाशन १९६६ में हुआ था। इसके बाद लंबे १३ वर्षों के उपरांत प्रकाशित हुई हरीश जी की लंबी कविता 'नष्टोमोह' को सतह से देखने पर कोई भी उसे सत्तर के जमाने के पूरे दृष्यपट के साथ आत्मालाप करने वाली उसी काल की रचना दृष्टि का किंचित विस्तार कह सकता है। लेकिन यदि कोई इसकी सतह की गहराई में जाए तो पता चलेगा कि संभवतः उस पूरे काल के साथ किया गया यह आत्मालाप उस काल के विद्रोही आवेग को एक शानदार श्रद्धांजलि का उपक्रम भर था। यह सच है कि '६६ से '७९ के बीच के इसी दौर में सन् '७५ के आंतरिक आपातकाल की परिस्थितियों ने 'रोटी नाम सत है' के गीतों के रचयिता, हरीश भादानी के एक नये नुक्कड़कवि के रूप को भी जन्म दिया। सन '७५ का आंतरिक आपातकाल और उसके पहले और बाद की उत्तेजक और चुनौती भरी राजनीतिक परिस्थितियों का दौर कुछ अलग ही था। इसमें 'रोटी नाम सत है' के जुझारू गीतों ने जन कविता के अपने एक अलग ही इतिहास की रचना की थी। हरीश जी ने अपने साहित्यिक-राजनीतिक जीवन के प्रारंभिक दौर में 'भारत की भूखी जनता को अपना लेफ्टिनेंट चाहिए' की तरह के जोशीले गीत और रुबाइयां आदि लिखी थीं। 'रोटी नाम सत है' के गीतों को उसी हरीश भादानी का कहीं ज्यादा चेतना संपन्न, कल्पनाप्रवर और परिपक्व पुर्नजन्म कहा जा सकता है। 'रोटी नाम सत है', 'राज बोलता सुराज बोलता' तथा 'बोल मजूरे हल्ला बोल' की तरह के उनके गीत आपातकाल के खिलाफ देश भर के जनवादी आंदोलन के अभिन्न अंश थे। कहने का मतलब यह कि यह एक अलग प्रकार की लड़ाइयों का दौर था और शायद तब बाकी सब कुछ स्थगित करके सड़कों पर उतर आना ही कवि और कविता की मजबूरी थी।

लेकिन मैं हरीश जी के रचनाकर्म के इस, और ऐसे सभी दौरों के खात्मे की बात कर रहा था। 'नष्टोमोह' के संदर्भ में कह रहा था कि यह शायद ऐसे दौरों के विस्तृत आख्यान के साथ उन्हें बाकायदा अलविदा कहने की तरह का एक उपक्रम था। इसी सिलसिले में मैं पहले 'वातायन' पत्रिका की बात करना चाहूंगा, जो एक रूमानी, स्वप्नदर्शी और प्रतिबद्ध कवि हरीश जी के साहित्यिक क्रिया-कलापों की पहचान थी। उनके संपादन में '६० के जमाने से लंबे काल तक नियमित मासिक और फिर कुछ दिनों तक अनियतकालीन निकली। यह पत्रिका '७३ तक आते-आते पूरी तरह बंद हो गयी। जानकार इस पत्रिका के बंद होने के अनेक कारणों को गिना सकते हैं, लेकिन लगभग डेढ़ दशक तक लगातार निकली इस पत्रिका से हरीश जी के इस प्रकार मुंह मोड़ लेने का कितना संबंध उनके 'नष्टोमोह' की

व्यापक पृष्ठभूमि से था, यह सचमुच एक गवेषणा का विषय हो सकता है।

बहरहाल, आज, हरीश जी की ७५वीं सालगिरह के इस मौके पर मैं जिस बात की ओर सबका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं, वह सन् '७५ के पहले के कवि की बात नहीं है। मेरा ध्यान उनके प्रारंभिक दो दशकों के रचनाकाल के बाद के इन तीन दशकों के रचनाकाल की ओर है। यह कम महत्वपूर्ण बात नहीं है कि लगभग तीन दशक पहले ही जिस कवि की शख्सियत की एक संपूर्ण प्रतिमा विकसित होकर लोगों के दिलों में रच-बस गयी थी, जिसने समाज को ढेरों अमर रचनाओं की सौगात दी, वह कवि बाद में और तीन दशकों तक अपनी ही उस विशाल प्रतिमा की छाया तले लिखता रहा, लगातार लिखता रहा और गौर करने लायक है कि अपने अतीत से मोहाविष्ट होकर खुद को ही दोहराते हुए नहीं, बल्कि उससे बिल्कुल भिन्न परिदृश्य और संदर्भों के साथ एक नये आवेग और नयी भाषा में किसी और ही नये सत्य के संधान का संकेत देता हुआ लिखता रहा।

'नष्टोमोह' का आवेशित कवि जो कहता है कि "उनके हाथ जगन्नाथ/उनके पांव वामन/उनका रोम-रोम समझदार/वे तीनों गुण/वे पांचों तत्व/वे संदीपन द्रोणाचार्य/चाणक्य बिस्मार्क/वे कलाएं और विज्ञान/जनक जननी भी/रिश्ते-अ-रिश्ते भी वे/औचित्य अनौचित्य भी वे/वे इकाई में दहाइयां/और मैं-/एक मान लिया गया कुछ भी नहीं"..."एक पैमाना उठाए/समझाने लगते हैं वे मुझे/एक फार्मूला-दहाई का गुणक/गुणनफल बटा मियादी हुंडी/या चैक/बराबर जीवित शरीर...अगवानी थाली/निहोरे और बिछौना/गदराया शरीर/आदि अनादि भूखों की /भौतिक अधिभौतिक/सभी संक्रामक व्याधियों की रामबाण दवा/मिलती है उसे/ आता हो जिसे /लीलावती रचित भिन्न/लंगड़ी भिन्न हल कर लेना, उसे खनखना देना।" और इनके मोह से मुक्त हो जिसे अपने वास्तविक रूप और कर्त्तव्य का बोध हो गया है, वह संशयमुक्त कवि विद्रोह की तमाम परंपराओं का खुद को अंशी मानते हुए भी अंत में कहता हैं कि "मुझे ही बनना है/आदमी के लिये/आदमी की सभ्यता, उसकी संस्कृति/और जब करने लगूंगा रचाव/आदमीः आरम्भ/मुझ जैसी दुनियाओं के लिये/हम खयाल अजीज!/तुम्हें ही दूंगा आवाज/संयोग लिये/गर्भा लिये जाने मेरे वर्तमान से /समय नहीं/शरीर नहीं/ रोशनी! शब्द! संबोधन!"

मेरी कोशिश इस नयी रोशनी, शब्द और संबोधन के साथ खुद ही आदमी की सभ्यता और संस्कृति बनने का हौसला रखने वाले कवि की लगभग तीन दशकों तक फैली परवर्ती रचनाशीलता की ओर ध्यान आकर्षित करने की है क्योंकि जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, यह कत्तई उनकी पूर्व-रचनाशीलता का दोहराव नहीं है। इसे यदि पूर्व का विपरीत न भी कहा जाए तो पूर्व से भिन्न तो कहना ही होगा और इसीलिये यह बेहद गंभीर, जरूरी और जिम्मेदारीपूर्ण जांच की मांग करता है। इसके अभाव में कवि हरीश भादानी के कृतित्व का एक बहुत बड़ा हिस्सा अव्याख्यायित रह जायेगा और उनके व्यक्तित्व का कभी भी समग्र आकलन नहीं हो पायेगा।

नष्टोमोह के दो वर्ष बाद ही १९८१ में हरीश जी के गीतों का एक नया संकलन प्रकाशित होता है, 'खुले अलाव पकाई घाटी'। तीन भागों में विभाजित इस संकलन के पहले भाग का शीर्षक है - "अपना ही आकाश...", लेकिन "अपना ही आकाश बुनूं मैं" गीत दूसरे भाग में शामिल है। नष्टोमोह में "मुझे ही बनना है/आदमी के लिये/आदमी की सभ्यता, उसकी संस्कृति" का जो संकल्प जाहिर किया गया है, 'अपना ही आकाश बुनूं' उसीका आगे फैलाव है। इस गीत की पंक्तियां हैं "सूरज सुर्ख बताने वालो/सूरजमुखी दिखाने वालो/...पोर-पोर/ फटती देखू मैं/केवल इतना सा उजियारा/रहने दो मेरी आंखों में/... तार-तार/ कर सकू मौन को/केवल इतना शोर सुबह का/भरने दो मुझको सांसों में/ स्वर की हदें बांधने वालो/पहरेदार बिठाने वालो/...अपना ही/ आकाश बुनूं मैं/केवल इतनी सी तलाश ही/भरने दो मुझको/ पांखों में/मेरी दिशा बांधने वालो/दूरी मुझे बताने वालो।"

सवाल उठता है कि हरीश जी यहां किन बंधनों, वर्जनाओं और निर्देशों से अपनी मुक्ति की मांग कर रहे हैं? कहना न होगा, यह एक सौ टके का सवाल है, जो हरीश जी के परवर्ती सृजन और उनकी रचनाशीलता की ऊर्जा को जानने की कुंजी भी बन सकता है। इसे एक प्रकार से नकार का नकार भी कहा जा सकता है। हमेशा ही हरीश जी की सारी ऊर्जस्विता और उनकी रचनाओं के सौन्दर्य का स्रोत किसी भी रूमानी कवि की तरह तमाम बाधाओं और बंधनों को नकारने में रहा है, लेकिन उम्र के इस नये मुकाम पर अब पुनः वे किस चीज को नकार कर फिर एक बार अपनी मुक्ति की कामना करते हैं, यह सवाल हरीशजी के काव्य के किसी भी अध्येता के लिये काफी तात्पर्यपूर्ण हो जाता है।

इस सवाल के साथ जब हम हरीश जी के परवर्ती रचनाकर्म की ओर नजर डालते हैं तो उसमें साफ तौर पर जो तीन चीजें दिखाई देती हैं, उन्हें रेखांकित करके ही मैं अपनी इस टिप्पणी की इतिश्री करूंगा। इनमें पहला है, गहरा विषाद- अपना ही आकाश बुनने से पैदा हुए अकेलेपन और सन्नाटे का ऐसा घटाटोप जिसमें सदा उत्साहित रहने वाले, समाज को बदलने का आह्वान करने वाले रचनाकार की सांसे घुट रही हैं, लेकिन वह

इसे इंकार नहीं कर सकता है। इसीलिये यह सन्नाटा भी एक प्रकार के अद्‌भुत, सम्मोहक सृजन का हेतु बनता है। इसे 'खुले अलाव पकाई घाटी' के गीतों में साफ देख सकते हैं, जब 'याद नहीं है' गीत में कवि कहता है- "चले कहां से/गए कहां तक/याद नहीं है/...रिस-रिस झर-झर ठर-ठर गुमसुम/ झील हो गया है घाटी में/हल चलती बस्ती में केवल/एक अकेलापन पांती में/ दिया गया या/ लिया शोर से / याद नहीं है/"। इसी संकलन में विषाद के चरम क्षणों का एक गीत है : "टूटी गजल न गा पाएंगे"। "सांसों का/ इतना सा माने/स्वरों-स्वरों/ मौसम दर मौसम/हरफ-हरफ/ गुंजन दर गुंजन/ हवा हदें ही बांध गई है/ सन्नाटा न स्वरा पाएंगे/ यह ठहराव न जी पाएंगे/...आसमान उलटा उतरा है/ अंधियारा न आंज पाएंगे/...काट गए काफिले रास्ता/ यह ठहराव न जी पाएंगे।"

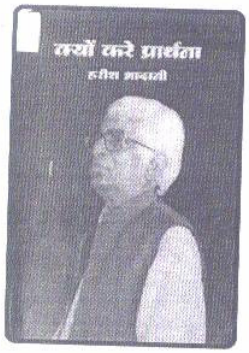

गौर करने लायक बात है कि इस दमघोंटू ठहराव की तीव्र अनुभूतियों के बीच हरीश जी अपने नये संबंधों के विकास और सोच की नयी दिशाओं के निर्माण की ओर प्रवृत्त होते हैं और ये नये संबंध हैं अपनी मरुभूमि की धरती के साथ नये संपर्कों के संबंध। "मौसम ने रचते रहने की /ऐसी हमें पढ़ाई पाटी/...मोड़ ढलानों चौके जाए/आखर मन का चलवा/अपने हाथों से थकने की/कभी न मांडे पड़वा/कोलाहल में इकतारे पर/एक धुन गुंजवाई घाटी" या "सुपरणे उड़ना मन मत हार" की तरह के भावबोध के साथ निरंतर रचनाशील बने रहने की अपनी नैसर्गिकता को कायम रखने की जद्दोजहद में ही उनके इन नये संबंधों और विचार के नये क्षेत्रों का उन्मेष होता है। और हम देखते हैं, सन्नाटे और अकेलेपन के उपरोक्त अनोखे, मन को गहराई तक छू देने वाले गीतों के साथ ही सामने आता है हरीश जी की रचना शक्ति का एक और उत्कृष्ट नमूना - "रेत में नहाया है मन"। "इन तटों पर कभी/धार के बीच में/डूब-डूब तिर आया है मन/...गूंगी घाटी में/ सूने धोरों पर एक आसन बिछाया है मन/...ओठ आखर रचे/ शोर जैसे मचे/ देख हिरणी लजी/ साथ चलने सजी/ इस दूर तक निभाया है मन।" धोरों की धरती के सौन्दर्य पर इससे खूबसूरत आधुनिक गीत क्या होगा।

अब तक 'शहरीले जंगल' में खोये मन के इस प्रकार अपनी धरती के रेत के समंदर में डूबने-तिरने, उस पर आसन बिछा कर खोजाने का यह सारा उपक्रम अपने ही अतीत से अलगाव से उपजे हरीश जी के सन्नाटे को एक नयी सृजनात्मक दिशा में मोड़ता है और हम पाते हैं "सन्नाटे के शिलाखंड पर"(१९८२), "एक अकेला सूरज खेले","आज की आंख का सिलसिला" (१९८५), "विस्मय के अंशी हैं" (१९८८) कविता संकलन और "पितृकल्प"(१९९१) तथा "मैं-मेरा अष्टावक्र" (१९९९) की तरह की लंबी कविताओं का एक विशाल रचना भंडार।

कहना न होगा कि लगभग अढ़ाई दशकों तक फैली हरीश जी की यह रचनाशीलता दूसरे अर्थों में अपनी जड़ों की तलाश की उनकी लंबी यात्रा का साक्षी है। इसी सिलसिले में भाषा के स्तर पर भी उनकी कविताओं में एक बड़ा परिवर्तन आता है। 'बांधा में भूगोल' (१९८४), "खण-खण उकल्या हूणिया" तथा "जिण हाथां आ रेत रचीजै" की तरह के राजस्थानी भाषा की कविताओं के संकलन सामने आते हैं और हिंदी की कविता भी स्थानीय भाषा और संदर्भों तथा निहायत निजी प्रसंगों से लबरेज होकर खुद अपना एक अलग संसार गढ़ लेती है। इस काल के हरीश भादानी की रचनाएं हिंदी के साधारण पाठक के लिये बहुत कुछ अपनी भाषाई संरचना की वजह से ही जैसे एक अबूझ पहेली बन कर रह गयी हैं।

मजे की बात यह है कि अपनी भाषा, अपनी धरती की स्थानिकता के इस तीव्र आग्रह के साथ अपनी जड़ों की तलाश के हरीश जी के इस रुझान का तीसरा महत्वपूर्ण पहलू सांस्कृतिक जड़ों की तलाश का रहा है। इसी के उपक्रम में प्राचीन पौर्वात्य साहित्य, वेदों, उपनिषदों और मिथकीय आख्यानों में उनके डूबने-उतरने और शायद कहीं-कहीं उनके रहस्यों में खो जाने का भी रहा है। मिथकों से हरीश जी पहले भी पूरी तरह मुक्त नहीं रहे। बिल्कुल प्रारंभिक 'सपन की गली' की रुमानी कविताओं के साथ ही 'हे शिव प्रथम मनीषी' की तरह की रचना भी संकलित है। बाद के दिनों में 'सड़कवासी राम' और 'गोरधन' की तरह के उनके अमर गीत मिथकों के सृजनात्मक नवीनीकरण के महत्वपूर्ण उदाहरण हैं। लेकिन "विस्मय के अंशी हैं" के एक अध्याय में जिस प्रकार वेदों की कविताओं का हिंदी रूपांतरण किया गया है और अभी हाल में प्रकाशित "अखिर जिज्ञासा" में उपनिषदों और धर्म-ग्रंथों की प्राचीन कथाओं पर जिस प्रकार की जिज्ञासाएं व्यक्त की गयी हैं, यह उनके व्यक्तित्व में एक सर्वथा नया संयोजन कहलायेगा।

आज का समय वैश्विक चुनौतियों का समय है। आज के रचनाकार से यह एक खास प्रकार की बौद्धिक प्रखरता की उम्मीद करता है। इन चुनौतियों का जवाब किसी उदासीनता या अतीतोन्मुखी खोह में खोजना कितना सही और जरूरी है, यह एक अहम प्रश्न है। हरीश जी की ७५वीं वर्षगांठ के मौके पर हम उनके रचनात्मक आवेग में और भी ज्यादा तीव्रता की कामना करते हैं। उनके जिस आवेग और विवेक ने अब तक अनेक प्रकार के लबादों को उतार फेंकने का साहस दिखाया है, बार-बार अपनी प्रासंगिकता को साबित किया है, वही भाव-प्रवणता और आलोचनात्मक विवेक उनमें आगे भी बने रहे, यही हमारी प्रार्थना है।◆

संपर्कः सी.एफ-२०४, साल्टलेक सिटी, कोलकाता-७०० ०६४

जनकवि हरीश भादानी को श्रद्धांजलि

भाईसाहब भादाणी जी!

- डॉ. श्रीलाल मोहता

उस दिन अलसवेरे राजस्थानी के साहित्यकार श्रीलाल जोशी ने मुझे फोन पर भारी मन से सूचना दी, 'भाईसाहब नहीं रहे।' हम सब जो उम्र में उनसे छोटे थे, उनको इसी नाम से संबोधित करते थे। वे मेरे बड़े भाई समान थे, क्योंकि वे मेरे पिता डॉ. छगन मोहता को अपना मानस पिता मानते थे। डॉ. छगन मोहता के साथ उनका संबंध कितना घनिष्ठ रहा होगा, यह हमें उनकी अंतिम इच्छा (वसीयत) से विदित होता है, जिसमें यह लिखा है कि डॉ. मोहता ने ही युवावस्था में उनके कानों में विचार और कविता के मंत्र फूंके थे।

भादाणी जी मनसा, वाचा तथा कर्मणा कवि व्यक्तित्व के धनी थे। बीकानेर स्थित डागा बिल्डिंग का एक कमरा जिसे ५ डागा बिल्डिंग के नाम से जाना जाता है– ५वें, ६ठे और ७वें दशक तक सामाजिक राजनैतिक और साहित्यिक गतिविधियों का केन्द्र माना जाता था। डॉ. छगन मोहता सायंकाल नियमित रूप से डागा बिल्डिंग के उस कक्ष में जाया करते थे। चाय पीते थे और चाय की चुस्कियों के साथ वैचारिक मंथन का प्रवाह निरंतर चलता रहता था। तब उस कक्ष में उस समय के सभी बौद्धिक युवा और प्रौढ़ आया करते थे। वहां से निकली वैचारिक धारा में एम.एन.राय, डॉ. राममनोहर लोहिया और गांधी जी केन्द्र में होते थे। इन गोष्ठियों का यही प्रभाव था कि भादाणी जी पहले रॉयिस्ट फिर समाजवादी और फिर मार्क्सवादी विचार के पक्षधर बन गए। डॉ. मोहता की बौद्धिक प्रखरता से वे बहुत प्रभावित थे। लेकिन उनको डॉ. मोहता का सुप्रसिद्ध समाज सुधारक रामगोपालजी मोहता के यहां नौकरी करना अखरता था। वे उनसे कहा करते थे कि सेठ १५० रुपए प्रतिमाह देकर आपका बौद्धिक शोषण करता है। आप तो ५ डागा बिल्डिंग में बैठकर हमारे साथ वैचारिक विमर्श किया कीजिए। आपके विमर्श से हमें दिशा–निर्देश मिलेगा। आपके सारे घर की जिम्मेवारी में ओढ़ लूंगा। जो साहित्यिक व्यक्तित्व इस वार्ता के साक्षी थे, उन्होंने मुझे बताया कि भादाणी जी की बात सुनकर डॉ. मोहता अंगुलियों से मेज बजाने लगे और उन्होंने हरीश जी से कहा जल्दी से चाय मंगा और बात आई गई हो गई। ज्ञातव्य रहे कि हरीश भादाणी जी के दादा मंगलचंद भादाणी बहुत धनी थे। उन्होंने ही भादाणी जी का पालन–पोषण किया था। उन्होंने अपने एक निजी पत्र में मुझे लिखा था कि मैंने मां शब्द सुना भर है और पिता को भी जब देखा जब वह पिता नहीं कुछ और ही थे यानी सन्यासी बाबा महाराज। उनके दादा की शिवबाड़ी गांव में एक बड़ी कोठी थी और बीकानेर के महाराजा गंगासिंह जिस मोटर गाड़ी की सवारी करते थे। उसी प्रकार की मोटर गाड़ी उनके पास थी। चूंकि भादाणी जी दरियादिल व्यक्तित्व के धनी थे। इसलिए वे अपने दादा की भौतिक धरोहर को संभाल कर नहीं रख सके। यूं कहें कि उसे उन्होंने उदारतापूर्वक न्योछावर कर दी। भादाणी जी के कवि मन पर डॉ. मोहता के अलावा राजस्थानी के सुप्रसिद्ध लोक कवि भतमाल जोशी का प्रभाव था। एक बार उन्होंने भादाणी जी से कहा कि कविता करना हंसी खेल नहीं है। कविता का अर्थ होता है, 'हियै में कांगसी फेराना' यानि हृदय पर कंघी करने के समान होती है। भादाणी जी ने इस वक्तव्य को आत्मसात कर रखा था, उसी कारण उनके गीतों में सहजता और मिठास तथा कविताओं में विचार तथा लोक कविताओं मे विभिन्न समस्याओं का वर्णन मिलता है।

भादाणी जी ने अकेले अपने दम पर उस समय 'वातायन' पत्रिका निकाली। यह पत्रिका तब के युवा साहित्यकारों के लिए एक संस्था थी। राजस्थान के अधिकांश साहित्यकारों को इस पत्रिका से संबल मिला था। इस पत्रिका ने भी भादाणी जी की तरह उतार–चढ़ाव के कई दौर देखे थे। इस पत्रिका का नई कविता और नवगीत विशेषांक आज भी लोगों को याद है।

डॉ. नन्दकिशोर आचार्य के साथ उनकी बेहद आत्मीयता थी। इसे पूरा साहित्य जगत जानता था। आचार्य ने सही मायनों में उनके संरक्षक और अभिभावक के दायित्व का निर्वहन किया यद्यपि उम्र में भादाणी जी उनसे बहुत बड़े थे। सरलता, निश्छलता और भावुकता के कारण भादाणी जी के साथ छल करने वालों की भी कमी नहीं थी। ऐसी परिस्थितियों में आचार्य सदैव उनका व उनके हितों का ध्यान रखते थे। मुझे याद है कि जब हिन्दी के एक प्राध्यापक संपादक ने बिना भादाणी जी की अनुमति के उनकी कुछ कविताओं को अपने संकलन में शामिल करके बाकायदा, विश्वविद्यालय के कोर्स में लगवा दिया और रॉयल्टी हड़प गया, तो आचार्य जी ने कानूनी नोटिस देकर संपादक और प्रकाशक दोनों को कटघरे में खड़ा कर दिया और भादाणी जी को उनका हक दिलाया। ऐसे कई संस्मरण हैं जिनसे हमें पता चलता है कि भादाणी जी का व्यक्तित्व और कृतित्व कितना सरल और निष्कपट था। वे दूसरे के लिए संघर्ष कर सकते थे, लेकिन अपने लिए नहीं। वे सही मायनों में समाज में शोषित वर्ग की सशक्त आवाज थे।

— साभार : राजस्थान पत्रिका रविवार 11 अक्टूबर 2009

जनकवि हरीश भादानी को श्रद्धांजलि

हदें नहीं होती जनपथ की

हदें नहीं होती जनपथ की
वह तो बस लाँघे ही जाए.....
एकल सीध चले चौगानों
चाहे जहाँ ठिकाना रचले
अपनी मरजी के औघड़ को
रोका चाहे कोई दम्भी
चीरता जाए दो फाँकों में
ज्यों जहाज़, दरिया का पानी

इससे कट कर बने गली ही
कहदे कोई भले राजपथ
इससे दस पग भर ही आगे
दिख जाए है ऊभी पाई ।
आर-पारती दिखे कभी तो
वह भी तो कोरा पिछवाड़ा
इन दो छोरों बीच बनी है
दीवारों की भूल भूलैया
इनसे जुड़-जुड़कर जड़ जाएँ
भीम पिरालें, हाथी पोलें
ये गढ़-कोटे ही कहलाए
अब 'तिमूरती' या 'दस नम्बर'
इनमें सूरज घुसे पूछ कर,
पहरेदार हवा के ऊपर,
खास मुनादी फिरे घूमती
कोसों दूर रहे कोलाहल
ऐसे अजब घरों में जी-जी
आखिर मरें बिलों में जाकर
जो इतना-सा रहा राजपथ
उसकी रही यही भर गाथा
आँखों वाले सूरदास जी
कुछ तो सीखें इस बीती से
पोल नहीं तो खिड़क खोल कर
अरू-भरू होलें जो पल भर
दिख जाए वह अमर चलारू
चाले अपना जनपथ साधे !

हदें नहीं होती जनपथ की
वह तो बस लाँघे ही लाँघे !
जनपथ जाने तुम वो ही हो
सोच वही, आदत भी वो ही
यह तो अपने अथ जैसा ही
तुम ही चोला बदला करते
लोकराज का जाप-जापते
करो राजपथ पर बटमारी
इसका नाभिकुंड गहरा है
सुनो न समझो, गूँजे ही है
लोकराज कत्तई नहीं वह
देह धँसे कुर्सी में जाकर
राज नहीं है काग़ज़ ऊपर
एक हाथ से चिड़ी बिठाना
राज नहीं आपात काल भी
किसी हरी का नहीं कीरतन
विज्ञानी जन सुन लेता है
यन्त्रों तक की कानाफूसी
'रा' रचता है कौन कहाँ पर
क्यों छपता है 'राम' ईंट पर
सजवाते रहते आँगन में
पाँचे बरस चुनावी मेला
झप-दिपते, झप-दिपते में यह
खुद को देखे, तुझको देखे
भरी जेब से देखे जाते
झोलीवाला पोंछा, पुरजा
कल तक जो केवल चीजें थी
आदमकद हो गई आज वे
चार दशक की पड़ी सामने
संसद में सपनों की कतरन
अब तो ये केवल दरजी हो
अपनी कैंची, सूई, धागा
लो अब तुम ही देखे जाओ
कैसे काट, उधेड़ें, साधे ?
हदें नहीं होती जनपथ की
वह तो बस लाँघे ही लाँघे !

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

Over-night travel bag worth Rs. 360/-
OR
Books with every 1 year subscription

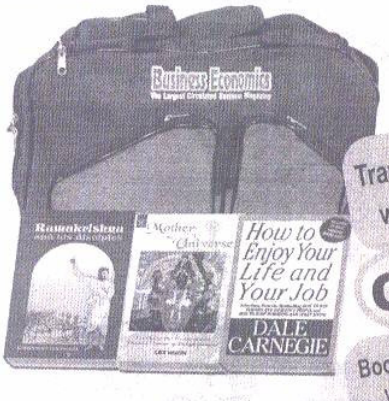

Travel bag + Books worth Rs. 1080/-

OR

Books worth Rs. 1080/- with every 3 years subscription

Business Economics Subscription Form

Yes! I would like to subscribe **Business Economics**

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	Gift Option
☐	3 Years	72	1080/-	1080/-	1080/-	☐ Travel Bag + Books OR ☐ Books
☐	1 Year	24	360/-	360/-	360/-	☐ Over-night Travel Bag OR ☐ Books

Name Mr./Ms. .....

Address .....

..... City/District: .....

State: ..... Country: ..... Pin Code : ☐☐☐☐☐☐

E-mail : ..... Mobile ..... Landline : ..... (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ..... dated ..... for Rs. ..... drawn on: .....

in favour of CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED

Signature ..... date .....

Mail your Cheque / DD to : Mr. Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022
Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact :

Kolkata : Ms. Sumita Agarwal : 033 2223-0368 • **New Delhi** : Lala P. Yadav : 98102 10095
Chennai : Ms. S. Bhuvaneshwari : 98416 54257 • **Kohima** : Povotso Lohe : 94360 00860

ज्ञान ज्योति यात्रा :

कोलकाता : रजत जयंती समारोह

बायें में सम्मेलन की तरफ से श्री हरिप्रसाद कानोड़िया दायें
श्री हर्ष नेवटिया सम्मान ग्रहण करते हुए पास में खड़े है श्री सज्जन भजनका

कोलकाता १० अक्टूबर २००९ शनिवार। युवाओं के सक्रिय राजनीति में भाग लेने से ही हम अपने लोकतांत्रिक देश को बचा सकते हैं ये बातें अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के तत्वावधान में रजत जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में समाज गौरव सम्मान के मुख्य अतिथि एवं राज्य के खेल, युवा मामले और सुन्दरवन विकास मंत्री कांति गांगुली ने महाजाति सदन में कही, उन्होंने कहा – लगता है कि आज के राजनेताओं का चाल–चलन युवाओं को आकर्षित नहीं करता। सम्मानित अतिथि और प्रदेश कांग्रेस के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रदीप भट्टाचार्य ने कहा कि मंच के 'युवा शक्ति ही राष्ट्र की शक्ति है' नारे का वह पूर्ण समर्थन करते हैं। इस अवसर पर संस्था द्वारा समाज गौरव सम्मान से हर्ष नेवटिया, सरदारमल कांकरिया, मधु कांकरिया व रतन शाह को सम्मानित किया गया। सिलीगुड़ी नगर निगम की चेयरमैन सविता अग्रवाल एवं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का भी अभिनन्दन किया गया।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिप्रसाद कानोड़िया ने कहा कि – मारवाड़ी समाज हर प्रान्त में समरसता व जनसेवा को अपना लक्ष्य माना है। महाराष्ट्र प्रान्त में मारवाड़ी समाज ने मराठी जनता के हृदय में जगह बनाई है तभी वहाँ मारवाड़ी समाज के २५ से अधिक विधायक राज्यसभा में चुनकर आते है। इस अवसर पर संस्था द्वारा प्रकाशित स्मारिका 'रजतिका' का विमोचन कांति गांगुली ने किया। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष जीतेन्द्र कुमार गुप्ता ने कहा कि ज्ञान ज्योति यात्रा केवल एक साधारण यात्रा ही नहीं बल्कि संपूर्ण मारवाड़ी समाज के गौरव और सम्मान की यात्रा है। हमें एकजुट होकर संगठन के **''विकलांगता विहीन देश हमारा''** के नारे को पूरा करना होगा। रजत जयंती समारोह के अध्यक्ष सज्जन भजनका ने स्वागत भाषण दिया। समारोह समिति के चेयरमैन अरुण कुमार बजाज ने मंच की गतिविधियों को विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन पवन टिबड़ेवाल एवं धन्यवाद ज्ञापन श्री महेश शाह ने दिया। मौके पर संस्था के कार्यकर्ता दिलीप गोयनका, अनिल डालमिया, मुकेश खेतान, प्रदीप केडिया, विमल कुमार चौधरी, विनोद सराफ, अनुराधा खेतान, किशन अग्रवाल, सज्जन बेरीवाल आदि कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया गया। समारोह के पूर्व ज्ञान ज्योति मशाल यात्रा निकाली गयी। जो सुबह ६.३० बजे

से स्थानीय हरियाणा भवन से प्रारम्भ होकर कलाकार स्ट्रीट, महात्मा गांधी रोड होते हुए महाजाति सदन पहुँची। मार्ग पर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की तरफ से ठण्डे पेय की व्यवस्था की गयी थी।◆

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन दीपावली मिलन सम्मेलन

व्यस्त जिंदगी में एक दूसरे से मिलने का मौका

– विजय गुजरवासिया

सर्वश्री भंवरलाल जाजोदिया, निर्मल गोयल, सत्यनारायण गुप्ता, सम्मेलन कार्यालय अध्यक्ष विजय गुजरवासिया, सचिव रामगोपाल बागला, इंदरचंद मेहरीवाल, राधा किशन सफ्फर

कोलकाता, २५ अक्टूबर। पश्चिम बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन का दीपावली मिलन समारोह मेल मिलाप एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ सम्पन्न हुआ। उद्घाटन भंवरलाल जाजोदिया ने किया। प्रधान अतिथि निर्मल कुमार गोयल ने संस्था के सेवा कार्यों की प्रशंसा करते हुए हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। विशिष्ट अतिथि सत्यनारायण गुप्ता ने कहा कि दीपावली पर्व उत्सव का है। समाज में ऊंच–नीच की भावना को हटाना होगा। महाराजा अग्रसेन ने भी समता का पाठ पढ़ाया था। एकता से ही समाज का कल्याण हो सकता है।

संस्था के कार्यवाहक अध्यक्ष विजय गुजरवासिया ने स्वागत भाषण में कहा कि ऐसे समारोहों में व्यस्त जिंदगी में एक दूसरे से मिलने का मौका मिलता है। सम्मेलन अनगिनत सेवा कार्यों में लिप्त है। इसमें सदस्यों का सहयोग जरूरी है। उन्होंने शीघ्र सम्मेलन की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने की घोषणा की। सचिव रामगोपाल बागला ने संस्था की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सम्मेलन सामाजिक कार्यों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। निर्धन छात्र–छात्राओं को आर्थिक सहयोग, बेरोजगार युवक–युवतियों को रोजगार की व्यवस्था, विधवाओं के कल्याण के लिए विकास, निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण सहित कई सेवा कार्यों में सक्रिय है। प्रीति सम्मेलन के अन्त में अल्पाहार की भी विशेष व्यवस्था की गई थी।

संचालन नंद किशोर अग्रवाल तथा धन्यवाद ज्ञापन इन्दरचंद मेहरीवाल ने किया। इस मौके पर "भगत के वश में है भगवान" नृत्य नाटिका का सफल मंचन किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में विश्वनाथ भुवालका, राम निवास चोटिया, शम्भू चौधरी, अशोक पारख, शिव कुमार क्याल, जे.के. जाजोदिया, पवन कुमार शर्मा, आर.पी. भालोटिया, राधा किशन सफर, विश्वनाथ सराफ, श्यामलाल डोकानिया, राजकुमार मुसद्दी, ओ.पी. गोयल आदि सक्रिय थे।◆

कन्हैयालाल सेठिया का 91वां जन्म दिवस

इस अवसर पर श्री जैथलिया द्वारा सम्पादित महाकवि कन्हैयालाल सेठिया की चुनी हुई कविताओं की कृति का लोकार्पण भी डॉ. विजय बहादुर सिंह ने किया।

समाजसेवी श्री सरदारमल कांकरिया ने महाकवि को अपना मार्ग दर्शक बताया और उनके सम्मान में हर वर्ष 'महाकवि कन्हैयालाल सेठिया' पुरस्कार देने की घोषणा की। श्री रतन शाह ने राजस्थानी भाषा के लिए महाकवि के महत् योगदान की चर्चा की। महावीर सेवा सदन के अध्यक्ष श्री जसवंत सिंह मेहता ने महाकवि को संस्था के प्रेरक एवं प्राण बताया। पश्चिम बंगाल के लोकप्रिय विधायक श्री दिनेश बजाज ने महाकवि के साथ अपने अंतरंग संबंधों की चर्चा की एवं आगे हर काम में अपने हार्दिक सहयोग का आश्वासन दिया। इस अवसर पर श्री प्रकाश चंडालिया ने भी अपने उद्गार प्रकट किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन डॉ. तारा दुग्गड़ ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन राजस्थान परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दूलसिंह जैन ने किया।◆

डीपीएम मेगासिटी में लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

संतोष से बड़ा कोई धन नहीं : पं. मालीराम शास्त्री

श्री महालक्ष्मी महायज्ञ की पूर्णाहूति के मौके पर हवन कुंड के समक्ष पूजन करते गुरुवर के साथ संरक्षक श्री विजय अग्रवाल, आयोजन के मंत्री श्री रामअवतार पोद्दार, श्री नवल जोशी व अन्य श्रद्धालु।

कोलकाता २६ अक्टूबर। महानगर में पहली बार आयोजित महालक्ष्मी महायज्ञ में माँ लक्ष्मी की कृपा पाने के लिये डीपीएस मेगासिटी स्कूल परिसर में कोलकाता और आसपास के इलाकों से श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा। गुरु पूजनोत्सव समिति, कोलकाता की ओर से अखिल भारतीय गौड़ ब्राह्मण सभा के सहयोग से आयोजित इस पांच दिवसीय महालक्ष्मी महायज्ञ की पूर्णाहुति २५ अक्टूबर की सुबह अभिजित मुहूर्त में पं. शास्त्री की उपस्थिति में विद्वत पंडितजनों द्वारा मंत्रोच्चार के साथ हुई।

दूसरे सत्र के प्रारंभ में कोलकाता महानगर के अनेक विशिष्ट व्यक्तियों ने पंडित शास्त्री से आशीर्वाद प्राप्त किया। आशीर्वाद समारोह का शुभारंभ सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री मामराज अग्रवाल ने दीप प्रज्जवलन करके किया। इस अवसर पर समिति के अध्यक्ष डॉ. एस.के. शर्मा ने समिति के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि पं. शास्त्रीजी के कुशल मार्गदर्शन में शीघ्र ही राजारहाट में "ममता का मंदिर" बनने जा रहा है जहां उपेक्षित बुजुर्गों एवं बच्चों के सामान्य जीवन यापन का प्रबंध रहेगा। सर्वश्री जोधराज लढ्ढा, पत्रकार विश्वम्भर नेवर, विधायक श्री दिनेश बजाज, पार्षद श्रीमती मीना पुरोहित ने अपने वक्तव्य में इस मंगलकारी महायज्ञ के लिए पं. शास्त्री जी के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित की।

पं. शास्त्री ने महायज्ञ के समापन सत्र पर कहा कि यह यज्ञ सबके घर–व्यापार कारोबार में सुख–समृद्धि व शांति की कामना से किया गया है और इसका लाभ सबको मिलेगा। इस पूरे महायज्ञ के प्रधान संरक्षक श्री बिजय अग्रवाल, समिति के मंत्री रामअवतार पोद्दार, संयोजक रामनरेश सराफ व प्रदीप सराफ और सह–संयोजक इंद्राणी सान्याल, जगदीश अग्रवाल, सुशील गोयनका, संदीप शर्मा सहित दोनों संस्थाओं के सभी पदाधिकारी व कार्यकर्त्ता इस महायज्ञ के आयोजन को निर्विघ्न सम्पन्न कराने में विशेष रूप से सक्रिय रहे। कार्यक्रम का संयोजन श्री प्रकाश चण्डालिया और श्री सुरेश कुमार भुवालका ने किया।

समापन सत्र पर विनोद वर्मा के कुशल निर्देशन में "नानी बाई को मायरो" की भावमय प्रस्तुति से श्रद्धालु भाव–विभोर हो उठे।◆

मारवाड़ी रिलिफ सोसाइटी

कोलकाता, ६ अक्टूबर २००९। अ.भा.मा.सम्मेलन के सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा ने **मारवाड़ी रिलिफ सोसाइटी** के अध्यक्ष श्री सज्जन भजनका के अनुरोध पर सोसाइटी अस्पताल का भ्रमण किया। इस अवसर पर आपने सोसाइटी के सेवा कार्यों से काफी प्रभावित होते हुए सोसाइटी भवन में चल रहे 'आपातकाल कक्ष' के नवनिर्माण हेतु अपनी तरफ से सहयोग देने की घोषणा की। चित्र में श्री सज्जन भजनका, श्री चिरंजीलाल अग्रवाल, श्री पवन टिबड़ेवाल, श्री केदारनाथ खण्डेलवाल, श्री गोपी बारपोलिया, श्री गोविन्द अग्रवाल (मानद सचिव) एवं श्री प्रवीण अग्रवाल के साथ बीच में सम्मेलन सभापति श्री नन्दलाल रुँगटा सोसाइटी भवन का निरक्षण करते हुए।

ऐसे दीप

- जयकुमार रुसवा

हास्य व्यंग्य कवि

ऐसे दीप जलाने होंगे

ज्योतिर्मय जगती करने को
भेद भाव का तम हरने को
शिखा–शिखा पर संकल्पों के
अग्निपुंज बैठाने होंगे
ऐसे दीप.....

इयोढ़ी–इयोढ़ी हो अपनापन
अपनेपन में जीवन–दर्शन
जीवन–दर्शन के प्रकाश हित
अन्तस्थल खटकाने होंगे
ऐसे दीप.....

प्रेम–प्रीत का ही उजास हो
प्यासी कोई नहीं प्यास हो
तेल और बाती की तरह
मन के तार मिलाने होंगे
ऐसे दीप.....

भाईचारा प्रथम ध्येय हो
और एकता भी अजेय हो
ईर्ष्या और द्वेष को तज कर
स्नेहिल हाथ बढ़ाने होंगे
ऐसे दीप.....

वर्गों की सारी कड़ियों तक
प्रासादों से झौपड़ियों तक
समतामय सोनल प्रकाश के
संदेशो पहुंचाने होंगे
ऐसे दीप.....

किरण–किरण भी श्लोक सुनाए
हर घर देवालय हो जाए
फलित साध यह मन की करने
तम के गात गलाने होंगे
ऐसे दीप.....

रहे दिशा ना कोई काली
हरसे चारों ओर दीवाली
यही कामना लक्ष्य बना कर
गीत सृजन के गाने होंगे
ऐसे दीप.....

– 66, पाथुरिया घाट स्ट्रीट
कोलकाता–700 006
मोबाईल–09433272705

पूर्वोत्तर प्रान्तीय मारवाड़ी सम्मेलन

रितिका जैन की मौत परगहरा शोक व्यक्त

गुवाहाटी, ५ अक्टूबर। श्रीमती रितिका जैन की रहस्यमय ढंग से आग में झुलस कर मौत होना समाज के लिए अत्यंत शर्मनाक घटना है। पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन रितिका जैन की मौत पर गहरा शोक व्यक्त करता है तथा इस घटना में दोषी पाये जाने वाले सभी व्यक्तियों को कड़ी से कड़ी सजा हो यह सरकार से मांग करता है। समाज में शिक्षा का प्रचार–प्रसार अत्यधिक होने के बावजूद गत कुछ अरसे से मारवाड़ी समाज में नारी–निर्यातन, उत्पीड़न और वधूदहन जैसी घटनाओं में तेजी से हो रही वृद्धि पर पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन गहरी चिंता व्यक्त करता है। सम्मेलन का मानना है कि बदलते दौर में इस प्रकार की घटनाएं होने पर जहां एक और समाज कमजोर बनता है, वही दूसरी ओर सामाजिक प्रतिष्ठा और छवि को भी गहरी ठेस पहुंचती है। सम्मेलन ऐसी घटनाओं की पुरजोर शब्दों में निन्दा करता है और समाज से आह्वान करता है कि ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो इसके लिए अपने परिवार में उचित माहौल बनाए।

हाल ही में घटित रितिका जैन की घटना ने सम्मेलन को काफी उद्वेलित कर दिया है। संबंधित घटना की छान–बीन में पुलिस प्रसाशन की शिथिलता पर सम्मेलन द्वारा गहरी चिंता व्यक्त की गई सम्मेलन के प्रान्तीय अध्यक्ष डॉ. श्यामसुन्दर हरलालका के नेतृत्व में ८ सदस्यों का एक दल कामरूप जिलाधीश से मिला और उन्हें सम्मेलन और मारवाड़ी युवा मंच, गुवाहाटी शाखा की ओर से एक ज्ञापन सौंपा, जिसमें तेजी से घटना की जांच कराये जाने और दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा दिलाए जाने एवं मासूम बच्चों के भविष्य के बारे में भी उचित संरक्षण दिये जाने की मांग की गई।

जिलाधीश ने प्रतिनिधि मंडल को आश्वासन दिया कि वे स्वयं इस मामले में व्यक्तिगत रुचि ले कर त्वरित कारवाई करेंगे एवं संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देंगे।

जिलाधीश से मिलने गए प्रतिनिधि मंडल में सम्मेलन उपाध्यक्ष श्री शिवभगवान शर्मा, महामंत्री श्री ओमप्रकाश चौधरी, संयुक्त मंत्री श्री सज्जन अग्रवाल एवं श्री दिलीप सराफ, सहायक मंत्री श्री के.आर. चौधरी के अलावा सम्मेलन की गुवाहाटी शाखा के मंत्री श्री ललित धानुका तथा मारवाड़ी युवा मंच गुवाहाटी शाखा के अध्यक्ष श्री प्रमोद अग्रवाल भी शामिल थे।◆

श्री विष्णु तुलस्यान एवं श्रीमती जयश्री तुलस्यान को इन्स्टीट्युट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरी ऑफ इण्डिया के चेयरमैन श्री एस. साहा पुरस्कृत करते हुए।

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance instructions. And there are Companies that also finace dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solution. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistantly acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication - 28, October 2009
RNI Regd. No. 2868/68

S R RUNGTA GROUP

Caring for Land and People...

RUNGTA SONS PRIVATE LIMITED

Mine Owners & Exports
(A Pioneer House for Minerals)

- ***IRON ORE*** *BF & SPONGE GRADE, BLUE DUST, CRUSHED FINES*
- ***MANGANESE ORE*** *BF & FERRO MANGANESE GRADE, DIOXIDE, FINES*
- ***LIMESTONE, BAUXITE, QUARTZ, PYROPHYLLITE***

CORPORATE OFFICE

RUNGTA HOUSE, CHAIBASA 833 201, JHARKHAND, INDIA
Phone: 06582-256861/ 256761/ 256661; Fax: 91- 6582 256442
Email: rungtas@satyam.net.in, Web Site: www.rungtamines.com; GRAM: "RUNGTA"

HEAD OFFICE :

8A, EXPRESS TOWER,
42A, SHAKESPEARE SARANI
KOLKATA 700017, INDIA
Phone: 033-2281 6580/3751
Fax: 91-33-2281 5380
Email: rungta_cal@sify.com

MINES DIVISION :

MAIN ROAD,
BARBIL 758035
DIST- KEONJHAR
ORISSA, INDIA
Phone: 06767- 275221/277481/ 441
Telefax: 91-6767-276161

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319
E-mail : samajvikas@gmail.com